वस्तुएं जो विशाल हैं

बाइबल की विशाल वस्तुओं पर
बारह रेडियो प्रवचन

लेखक
सनी डेविड़

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
बॉक्स न० ३८१५
नई दिल्ली-११००४६

प्रथम संस्करण : १९८०

मुद्रक :
प्रिंट इण्डिया
मायापुरी, दिल्ली

Things Which Are Great

TWELVE RADIO SERMONS ON GREAT THINGS
OF THE BIBLE
(IN HINDI)

BY
SUNNY DAVID

Published by :
Church of Christ
BOX 3815
NEW DELHI-110049

CONTENTS

1.	A Great Gospel	1
2.	A Great Church	6
3.	A Great Hope	11
4.	A Great Command	16
5.	A Great Memorial	20
6.	A Great Day	25
7.	A Great Promise	30
8.	A Great Example	35
9.	A Great Faith	40
10.	A Great Sacrifice	45
11.	A Great Love	50
12.	A Great Invitation	55

परिचय

विशालता का अनुमान आप किस प्रकार लगाते हैं ? आप के निकट कौन सी वस्तुएं विशाल हैं ? मुझे नहीं मालूम कि इन प्रश्नों के उत्तर आप किस प्रकार देंगे। परन्तु इस पुस्तक में लेखक ने बारह विशाल वस्तुओं की ओर हमारा ध्यान दिलाया है। मेरा विश्वास है कि प्रस्तुत रचना को पढ़ने के बाद आप इन वस्तुओं की विशालता का अनुभव करेंगे, और अपने जीवन में इन्हें सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान देंगे।

मनुष्य ने शताब्दियों से अनेक धार्मिक प्रणालियों को जन्म दिया है। अनेकों प्रभु, स्वामी तथा मार्ग हैं, भिन्न-भिन्न कलीसियाएं, उपासना की विधिएं नियम तथा शिक्षाएं हैं। यद्यपि लाखों लोगों ने इन्हें स्वीकार भी कर लिया है, परन्तु इन में से कोई भी वस्तु उन विशाल वस्तुओं का स्थान नहीं ले सकती जिन्हें परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा मनुष्य को दिया है। परमेश्वर महान है तथा उसका मार्ग महान् है। हम उसके मार्ग में सुधार या परिवर्तन नहीं ला सकते। हमें चाहिए कि हम नम्रता के साथ उसकी बातों को स्वीकार करके उसकी आज्ञानुसार चलें।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक भाई सनी डेविड ने इस रचना में ऐसी बारह विशाल वस्तुओं का वर्णन किया है जो आत्मिक दृष्टिकोण से बड़ी ही महत्वपूर्ण तथा विशाल हैं। लेखक ने प्रत्येक वस्तु की विशालता को प्रमाणित करने के लिये परमेश्वर के वचन पवित्र बाइबल का इस्तेमाल किया है। उन्होंने दिखाया है कि इन वस्तुओं का हमारे

जीवनों से कितना गहरा सम्बन्ध है, और यदि हम इन वस्तुओं की विशालता को स्वीकार करके इन्हें अपने जीवनों में आवश्यक स्थान दें, तो हमारे जीवन परमेश्वर की आशीषों से भरपूर हो जाएंगे।

इन प्रवचनों को भारत तथा अनेक अन्य देशों में लाखों लोगों ने अपने-अपने रेडियो पर रेडियो श्री लंका द्वारा सुना है। कदाचित् आप ने भी इन्हें सुना होगा। किन्तु अब इस पुस्तक के माध्यम से इन्हें एक स्थायी रूप मिला है ताकि पाठक इनसे लाभान्वित हों और ये बहुतों के लिए आशीष का कारण बनें।

जे०सी०चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली

भूमिका

मसीह से लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व परमेश्वर ने भविष्द्वक्ता यशायाह के द्वारा कहा था, "मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का सा अन्तर है।" (यशायाह ५५ : ८, ९)। जब परमेश्वर ने शाऊल को अपनी आज्ञा पर न चलने के कारण इस्राएल पर राज्य करने के लिए तुच्छ जाना। तो शमूएल को परमेश्वर ने बेतलेहेमी यिशै के घर भेजा ताकि वह उसके पुत्रों में से किसी एक का परमेश्वर की इच्छानुसार इस्राएल पर राज्य करने के लिए अभिषेक करे। शमूएल ने यिशै के पुत्रों में से एलीआब पर दृष्टि करके सोचा कि निश्चय ही परमेश्वर का अभिषिक्त यही होगा, क्योंकि वह उसे हट्टा-कट्टा और रौबीला और राजा होने के योग्य प्रतीत हुआ। परन्तु इससे पहले कि शमूएल एलीआब के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उसका अभिषेक करता। परमेश्वर ने शमूएल से कहा, "न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।" (१ शमूएल १६ : ७)।

प्रस्तुत पुस्तक में मैंने ऐसी बारह वस्तुओं को पाठक के सम्मुख रखा है जो विशाल हैं। कदाचित इन में से कोई भी वस्तु आपके निकट विशाल न हो। क्योंकि मनुष्य विशालता का अनुमान बाहरी रूप देखकर ही लगाता है। धन, मान, ओहदा, सम्पत्ति इत्यादि मनुष्य के

निकट विशालता के प्रतीक हैं। परन्तु जो मनुष्य के निकट बुद्धिमानी है वही परमेश्वर के निकट मूर्खता है (१ राजा ५ : १-१४ ; १ कुरिन्थियों १ : १८-२५), और जो मनुष्य के निकट धनी है वही परमेश्वर के निकट निर्धन और कंगाल है।

जिन वस्तुओं के बारे में आप इस पुस्तक में पढ़ने जा रहे हैं वे परमेश्वर की दृष्टि में विशाल हैं। परमेश्वर ने इन विशाल वस्तुओं को मनुष्य पर अपने वचन के द्वारा प्रगट किया है। वह चाहता है कि हम सब इन वस्तुओं के महत्व को समझें और अपने जीवनों में इन्हें उचित स्थान दें। उसी का अनुग्रह उन सब पर हमेशा तक बना रहे जो उसके वचन की आज्ञाओं पर विश्वास लाकर उन्हें मानते हैं।

सनी डेविड
सत्य सुसमाचार
नई दिल्ली

श्री सनी डेविड की

अन्य उपलब्ध पुस्तकें

१. पन्द्रह प्रभावशाली रेडियो प्रवचन
२. बीस लघु रेडियो संदेश
३. मुक्ति के संदेश
४. हम किसके पास जाएं ?
५. यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे...
६. जीवन के वचन
७. मसीही संदेश
८. पुराने नियम के अनुसार
९. नए नियम के अनुसार
१०. मसीह के दावे
११. ऐसा बड़ा उद्धार

निमंत्रण

प्रत्येक मंगलवार बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार को रात नौ बजे से सवा नौ बजे तक और रविवार को दिन में डेढ़ बजे से पौने दो बजे तक बाइबल प्रचारक श्री सनी डेविड को रेडियो श्री लंका से २५ से ४१ मीटर बैंड पर सुनिए।

बाइबल के पाठों को डाक द्वारा मुफ्त प्राप्त करके अपने ही घर में परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिए लिखें :

सत्य सुसमाचार
बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली-११००४६

विषय सूची

१.	एक विशाल सुसमाचार	१
२.	एक विशाल कलीसिया	६
३.	एक विशाल आशा	११
४.	एक विशाल आज्ञा	१६
५.	एक विशाल यादगार	२०
६.	एक विशाल दिन	२५
७.	एक विशाल प्रतिज्ञा	३०
८.	एक विशाल आदर्श	३५
९.	एक विशाल विश्वास	४०
१०.	एक विशाल बलिदान	४५
११.	एक विशाल प्रेम	५०
१२.	एक विशाल निमंत्रण	५५

एक विशाल सुसमाचार

आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व यरुशलेम के एक नगर में जब प्रभु यीशु का जन्म हुआ था, तो वह ऐसे ही एक साधारण सा दिन था। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि आम दिनों की तरह उस रोज़ भी कुछ गड़रिए मैदान में रहकर रात को अपने पशुओं के झुन्ड का पहरा दे रहे थे। किन्तु अचानक उनके चारों ओर एक प्रकाश चमका, और वे किसी को अपने पास खड़ा देखकर बेहद डर गए। लिखा है, कि, "तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।" (लूका २ : १०, ११)।

यूं तो संसार में प्रति दिन हज़ारों बालकों का जन्म होता है, और लोग एक बालक के जन्म लेने पर बड़े ही खुश होते हैं। परन्तु यीशु का जन्म न केवल पृथ्वी के दृष्टिकोण से ही किन्तु स्वर्ग के दृष्टिकोण से भी आनन्द की बात थी। और इतना अधिक महत्वपूर्ण था उसका जन्म कि उस खुश-खबरी का पैगाम देने के लिये स्वर्ग के दूत भी पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच उतर आए। पृथ्वी पर यीशु का जन्म एक अद्भुत घटना थी। उसका जन्म पहिले से की गई उन भविष्यद्वाणियों और प्रतिज्ञाओं के अनुसार हुआ था जो उसके जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व की गई थीं, और जिनके बारे में आज हम बाइबल के पुराने नियम में पढ़ते हैं। उसका जन्म एक विशेष उद्देश्य के लिये हुआ था। वह लोगों का उद्धार करने के लिये पैदा हुआ था। इसलिये, हम देखते हैं, कि स्वर्ग-

दूत ने उन गड़रियों से कहा, कि मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है।

यीशु का जीवन बड़ा ही साधारण था। उसका जन्म एक बड़े ही साधारण घर में हुआ था। आरम्भ में वह बढ़ई का काम किया करता था। यीशु के आरम्भिक जीवन के बारे में बाइबल हमें इससे अधिक और कुछ खास नहीं बताती कि वह "बालक बढ़ता और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।" "और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।" (लूका २ : ४०, ५२)।

परन्तु जब उसकी आयु लगभग तीस वर्ष की हुई, तो बाइबल बताती है, कि उसने यरदन नदी के पास आकर यूहन्ना के द्वारा बपतिस्मा लिया। और फिर इसके बाद बाइबल हमें बताती है, कि, "यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे और जिनमें दुष्ट आत्माएं थीं और मिर्गीवालों और भोले के मारे हुओं को उनके पास लाए और उसने उन्हें चंगा किया। और गलील और दिकापुलिस और यरुशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली।" (मत्ती ४ : २३-२५)।

इसके बाद यीशु पृथ्वी पर लगभग तीन वर्ष तक और रहा। क्योंकि बाइबल हमें बताती है कि जब वह करीब तेंतीस वर्ष का था तो उस समय कुछ लोगों ने उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला। परन्तु उन तीन वर्षों में यीशु ने बहुत बड़े-बड़े काम किए। उसने शिक्षा और

उपदेश दिए, जिनके बारे में हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं। किन्तु इस सबके अतिरिक्त, उसने अनेकों जगह लोगों को अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में भी बताया। एक बार जब कुछ लोग उसके पास आकर कहने लगे, कि, "हे गुरु, हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं।" तो यीशु ने उन से कहा, "यूनुस तीन रात दिन जल जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन दिन रात पृथ्वी के भीतर रहेगा।" (मत्ती १२ : ४०)। यह कहकर उसने उन पर प्रगट किया कि वह अपनी मृत्यु के पश्चात कब्र में गाड़ा जाएगा और फिर तीन दिन के बाद जी उठेगा। फिर एक अन्य स्थान पर उसने कहा, "और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १४, १५)। इस प्रकार यीशु ने यह भी प्रगट किया कि वह ऊंचे पर चढ़ाकर, अर्थात क्रूस पर मारा जाएगा।

वास्तव में, यीशु अपने बारे में प्रत्येक बात की जानकारी रखता था। क्योंकि उसने आम लोगों की तरह, आपकी और मेरी तरह, जन्म ही नहीं लिया था, परन्तु वह जगत में एक विशेष उद्देश्य के लिये आया था। प्रत्येक मनुष्य, जो संसार में जन्म लेता है बड़ा होकर अपने जीवन के लिये किसी उद्देश्य को ढूंढ़ता है। परन्तु यीशु का जन्म ही एक उद्देश्य के साथ हुआ था। वह एक विशेष उद्देश्य के लिये स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया था। और वह उद्देश्य था, जैसा कि अभी कुछ देर पहिले हमने देखा, कि स्वर्गदूत ने लोगों के एक झुंड से कहा था कि मैं तुम्हें एक आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं कि आज तुम्हारे लिये और सब लोगों के लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है। यानि यीशु ने लोगों का उद्धार करने के लिये जन्म लिया था।

परन्तु जैसा कि यीशु ने एक जगह स्वयं कहा, था "कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है।" (यूहन्ना १२ : २४)। इसी

तरह जब यीशु मारा गया और ज़मीन में गाड़ा गया, और फिर जब तीसरे दिन वह मुर्दों में से जी उठा, तो वह उन सबके लिये जीवन पाने का कारण बना जो उसमें विश्वास लाते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं।

इस सम्बन्ध में पवित्र बाइबल एक जगह कहती है : "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६ : २३)। "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।" (रोमियों ५ : ६)। मित्रो, न केवल यीशु मसीह का जन्म, परन्तु वास्तव में, यीशु की मृत्यु हमारे लिये एक विशाल सुसमाचार है। यह एक विशाल सुसमाचार है क्योंकि यीशु जगत के सारे लोगों के लिये मरा। यह एक विशाल सुसमाचार है, क्योंकि यीशु एक बड़ी ही विशाल और मूल्यवान वस्तु को बचाने के लिये, अर्थात आपकी और मेरी आत्मा को नरक के भयानक दन्ड से बचाने के लिये मरा। यह एक विशाल सुसमाचार है, क्योंकि यह जगत के सारे लोगों के लिये है। प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह कहता है, कि, "मैं यूनानियों और अन्य भाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं .. क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये.. उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।" (रोमियों १ : १४, १६)।

मित्रो, क्या आप अपने पापों से उद्धार पाना चाहते हैं ? क्या आप पाप के दासत्व से मुक्त होना चाहते हैं ? क्या आप इस जीवन में मृत्यु के बाद अनन्त जीवन की आशा प्राप्त करना चाहते हैं ? और क्या आप आनेवाले जीवन में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं ? आपको चाहिए कि आप परमेश्वर के इस बरदान को स्वीकार करलें जिसे उसने अपने पुत्र मसीह यीशु में प्रगट किया है। यदि आप पाप से

छुटकारा पाकर जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं, तो आपको चाहिए कि आप परमेश्वर के उस एकलौते पुत्र में विश्वास ले आएं, जिसे उसने जगत के सारे लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर चढ़वाकर बलिदान कर दिया.। क्योंकि आपका उद्धार केवल एक ही वस्तु के द्वारा हो सकता है, और वह वस्तु है, यीशु मसीह का विशाल सुसमाचार ! और परमेश्वर चाहता है, कि आप उद्धार पाने के लिये इस सुसमाचार में विश्वास करें। वह चाहता है, कि आप उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करें जो आपके पापों के लिये आपके स्थान पर मारा गया। परमेश्वर चाहता है, मित्रो, कि अब आप अपना मन सब बातों से फिराकर, बपतिस्मा लेकर उसके पुत्र मसीह यीशु की मृत्यु और उसके जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाएं। जब आप उसमें विश्वास करेंगे और अपना मन फिराएंगे, और अपने आपको मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मे के द्वारा पानी की कब्र के भीतर दफ़ना देंगे, तो परमेश्वर आपको यीशु के कारण क्षमा करेगा और आपका उद्धार करेगा। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, कि जो उसमें विश्वास करेगा और बापतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६ : १६)। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह कहता है, "सो जबकि हम अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे ? क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे ?" (रोमियों ५ : ९-१०)।

मित्रों, मेरी आशा है, कि आप परमेश्वर के बरदान को स्वीकार करेंगे, और उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाकर अपने आपको उसकी आज्ञाओं पर चलने के लिये उसे सौंप देंगे। परमेश्वर आप सबको यीशु मसीह में शांति दे।

—०—

एक विशाल कलोसिया

मित्रो :

यह एक बड़ा ही अच्छा और सुन्दर अवसर है हम सबके पास। सो हम इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। इस प्रोग्राम में हम हमेशा उन वस्तुओं के बारे में देखते हैं, जिनका सम्बन्ध मनुष्य की आत्मा से है। हम उन वस्तुओं के बारे में देखते हैं, जो आत्मिक हैं और जिनके सम्बन्ध में हमें परमेश्वर के वचन अर्थात् पवित्र बाइबल में मिलता है। परमेश्वर का वचन हमारा ध्यान कुछ ऐसी विशाल वस्तुओं की ओर दिलाता है, जिनको शायद हम अपने जीवन में कोई महत्व नहीं देते। बाइबल हमारा ध्यान मनुष्य की आत्मा पर दिलाकर कहती है कि जगत में केवल एक ही वस्तु मूल्यवान और महत्वपूर्ण हैं, और वह मनुष्य की आत्मा है। बाइबल हम पर प्रगट करती है की मनुष्य की सबसे विशाल आवश्यकता मुक्ति अर्थात् पाप से छुटकारा है। बाइबल हमें बताती है कि मनुष्य की विशाल आत्मा को पाप के दण्ड से बचाने के लिए परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह का विशाल बलिदान दिया। बाइबल में हमें एक विशाल सुसमाचार मिलता है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जगत के सारे लोगों के पापों के बदले में क्रूस के ऊपर मारा गया और अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद वह फिर जी उठा। और अब वह संसार में से हर एक मनुष्य को एक विशाल निमन्त्रण के द्वारा यह कहकर बुला रहा है : "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती ११ : २८)

परन्तु मित्रो, आज हम इसी प्रकार की एक और विशाल वस्तु के बारे में देखने जा रहे हैं। आज हम एक विशाल कलीसिया के बारे में देखगे। मित्रो, बाइबल हमें एक विशाल कलीसिया, अर्थात् एक विशाल मंडली के बारे में बताती है। बाइबल हमें बताती है कि यह मंडली इसलिए विशाल नहीं है कि इसके पास धन और पृथ्वी पर की अन्य वस्तुएँ बहुतायत से हैं। क्योंकि मनुष्य विशालता का अनुमान इसी दृष्टिकोण से लगाता है। यदि किसी मंडली के पास बहुत सा धन है, इमारतें और कारोबार इत्यादि हैं, तो लोग अक्सर ऐसी मंडली को विशाल समझते हैं। बाइबल में हम लौदीकिया नामक स्थान पर स्थित एक कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं। हम पढ़ते हैं, कि प्रभु यीशु ने यूहन्ना नाम के अपने एक प्रेरित को आज्ञा देकर कहा, कि उसे मेरी ओर से यह लिख दे, कि प्रभु कहता है, "कि मैं तेरे कामों को जानता हूं, कि तू न तो ठण्डा है न गर्म : भला होता कि तू ठण्डा या गर्म होता। सो इसलिए कि तू गुनगुना है, और न ठण्डा है न गर्म, मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूं। तू जो कहता है, कि मैं धनी हूं, और धनवान हो गया हूं, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं ; और यह नहीं जानता, कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अन्धा और नंगा है। इसीलिए मैं तुझे सम्मति देता हूं, कि आग में ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले कि धनी हो जाए; और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहिन कर तुझे अपने नंगेपन की लज्जा न हो; और अपनी आँखों में लगाने के लिए सुर्मा ले, कि तू देखने लगे।" (प्रकाशितवाक्य ३ : १५—१८)।

यह कलीसिया लोगों की दृष्टि में एक बड़ी ही महान् कलीसिया थी। यह मंडली अपनी दृष्टि में बड़ी विशाल मंडली थी। इस चर्च को अपने धन और दिखावटीपन पर बड़ा घमण्ड था। परन्तु प्रभु ने उससे कहा, कि तू मेरे मुँह में एक कड़वी और कसैली वस्तु के समान है और इसलिए मैं तुझे उगलने पर हूं। तू कहता है कि मैं धनी हूं।

धनवान हो गया हूं। मुझे अब किसी वस्तु की घटी नहीं। परन्तु प्रभु ने कहा कि तू इस बात से अज्ञान है कि वास्तव में तू आभागा, तुच्छ, कंगाल, अन्धा और नंगा है। तुझे आत्मिक धन की घटी है, तुझे आत्मिक वस्त्र पहिनने की आवश्यकता है। और क्योंकि तेरी आँखों पर पर्दा पड़ा है इसलिए तुझे चाहिए कि अपनी आत्मा की आँखों को खोलने के लिए मुझ से सुर्मा ले ले। मित्रो, इस कलीसिया के पास सांसारिक दृष्टिकोण से सब कुछ था, परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण से उस के पास कुछ भी न था। इस कलीसिया के पास एक अच्छी सुन्दर चर्च बिल्डिंग थी, उसमें बहुत सारे लोग थे, परन्तु उसके भीतर मसीह नहीं था। और प्रभु ने उससे कहा, कि, "देख, मैं द्वार पर खड़ा हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।" (प्रकाशित-वाक्य ३ : २०)।

वास्तव में मित्रो, एक विशाल कलीसिया का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण यही है कि उसके भीतर यीशु मसीह है। और जिस कलीसिया के भीतर मसीह है उसकी पहिचान यह है कि वह कलीसिया प्रभु के वचन के अनुसार बनी हुई है।

बाइबल में, लिखा है, कि कलीसिया का बनानेवाला मसीह है। उसने कहा था, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। (मत्ती १६ : १८) वास्तव में, प्रभु जानता था, कि कुछ समय पश्चात् बहुतेरे लोग अनेकों अन्य कलीसियाओं का निर्माण करेंगे। सो उसने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। उसने यह नहीं कहा, कि मैं पौलुस की या पतरस की या यूहन्ना की कलीसिया बनाऊंगा। उसने यह भी नहीं कहा, कि मैं रोम की या इंगलैंड की कलीसिया बनाऊंगा। परन्तु उसने क्या कहा ? उसने कहा, मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। सो फिर जब उसने कलीसिया को बनाया (प्रेरितों २) तो वह किसकी

कहलाई ? स्वाभाविक ही है, कि वह मसीह की कलीसिया कहलाई। (रोमियों १६ : १६)। सो कलीसिया को प्रभु के वचनानुसार होने के लिये आवश्यक है कि वह मसीह के नाम से कहलाए।

फिर बाइबल हमें बताती हैं, कि अपनी कलीसिया को मसीह ने यरुशलेम में सन् ३३ में स्थापित किया। (यशायाह २ : १, २; प्रेरितों २)। यद्यपि इसके सैकड़ों वर्ष बाद रोम, इंगलैंड और अमेरिका इत्यादि देशों में अन्य और भी कई कलीसियाएं नए-नए नामों और अलग-अलग सिद्धांतों पर स्थापित हुईं। परन्तु मसीह की कलीसिया की बुनियाद यरुशलेम में पड़ी थी। और इस कलीसिया के सदस्य जहां कहीं भी संसार में गए उन्होंने प्रभु की शिक्षानुसार उसी प्रकार मसीह की कलीसियाओं को बनाकर खड़ा किया। (मत्ती २८ : १९, २०)।

बाइबल हमें बताती है, कि संसार में जहां कहीं भी लोग यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास ले आते हैं, और उसकी आज्ञा को मानकर अपने पापों से मन फिराते हैं, और अपने पापों की क्षमा के लिये उसमें बपतिस्मा लेते हैं, उन्हें मसीह अपनी कलीसिया में प्रतिदिन मिलाता रहता है। (प्रेरितों २ : ३७-४१, ४७)। बाइबल कहती है, कि अपनी कलीसिया को मसीह ने अपने लोहू से मोल लिया है। (प्रेरितों २० : २८)। इसका अर्थ यह है, कि मसीह की कलीसिया में हर एक मनुष्य उसके लोहू से खरीदा गया है। क्योंकि मसीह की कलीसिया उन लोगों की मंडली है जिन्होंने मसीह के बहाए लोहू से उद्धार प्राप्त किया है। प्रेरित पतरस एक जगह मसीह की कलीसिया को लिखकर कहता है, "तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।" (१ पतरस १ : १८, १९)। मित्रो, किसी भी वस्तु का महत्व उसके दाम से पहिचाना जाता है। और मसीह के लोहू से बढ़कर किसी वस्तु का और क्या दाम हो सकता

है ? यह एक विशाल दाम है ! और इस मूल्य से खरीदी हुई कलीसिया एक विशाल कलीसिया है ।

परन्तु विशेष बात यह है, कि आप भी इस विशाल कलीसिया में शामिल हो सकते हैं । क्योंकि यदि आप मसीह में यह विश्वास करेंगे कि वह आपके पापों के लिये क्रूस के ऊपर मारा गया । और यदि आप अपने पापों से मन फिराएंगे, और फिर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे तो मसीह आपका उद्धार करेगा और उसी तरह आपको भी अपनी कलीसिया में मिलाएगा जिस प्रकार उसने आरम्भ में लोगों को मिलाया । (प्रेरितों २ : ३८, ४१, ४७) ।

इस सम्बन्ध में यदि आप कुछ और जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो अपने प्रश्नों को लिखकर हमारे पते पर भेज दीजिए ।

परमेश्वर आप सबको अपने वचनानुसार चलने के लिये समझ और ताकत दे ।

—०—

एक विशाल आशा

मित्रो :

इस प्रोग्राम में मैं आपके सामने किसी धर्म या संगठन को पेश नहीं कर रहा हूं, परन्तु मैं आपका ध्यान बार-बार उस एक मात्र मार्ग की ओर दिलाता हूं, जो परमेश्वर का मार्ग है, अर्थात यीशु मसीह । मसीह परमेश्वर का वह मार्ग है जिसके द्वारा या जिस में होकर हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर के पास पहुंच सकते हैं और क्योंकि हम मसीह के पीछे चलते हैं इसलिये हम मसीही कहलाते हैं। (यूहन्ना १४ : ६ ; प्रेरितों ११ : २६)। एक मसीही होना वास्तव में बड़े ही आनन्द और आशीष की बात है। प्रेरित पौलुस एक जगह बाइबल में मसीही लोगों को लिखकर कहता है : "क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थायी है।" (२ कुरिन्थियों ५ : १)। और फिर प्रेरित यूहन्ना एक स्थान पर इस प्रकार कहता है : "देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएं, और हम हैं भी इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना। हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की संतान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे ! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है" (१ यूहन्ना ३ : १, २)। यह कितनी विशाल आशा है ! कितनी महान आशा है ! जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके अर्थात मसीह के समान होंगे !

परन्तु मित्रो, यदि इस जीवन में हम मसीह के समान बनने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं, तो फिर हम यह आशा कैसे रख सकते हैं कि जग वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे ? सो इसलिये आवश्यक है कि आनेवाले जीवन में मसीह के समान पाए जाने के लिये हम इस वर्तमान जीवन में मसीह के समान बनने का प्रयत्न करें। इसी बात को ध्यान में रखकर, आईए अब हम मसीह के ऊपर विचार करें और देखें कि उसका स्वभाव कैसा था। ताकि उसके समान बनने के लिये हम भी वैसे ही बने।

सबसे पहिले, मसीह के बारे में हम देखते हैं. कि वह बड़ा ही प्रेमी तथा दयालू था। एक जगह लिखा है। कि जब उस ने लोगों की एक भीड़ को देखा तो उसे उन पर बड़ा तरस आया क्योंकि वे उसको उन भेड़ों के समान जान पड़े जो अपने मार्ग से भटक गई हों। (मत्ती९ : ३६)। फिर, जब वह उपदेश दे रहा था और एक भीड़ उसके पीछे हो ली, और जब उसने देखा कि कि उन्होंने दिन-भर से कुछ भी नहीं खाया है, तो उसे उन पर बड़ी दया आई और उस ने उन्हें खाने को दिया (यूहन्ना ६)। जब वह लाज़र के घर आया, और लोगों को लाज़ार की मृत्यु के कारण शोक करते और रोते पाया, तो वह भी उनके साथ रोने लगा। (यूहन्ना ११)। और बाइबल में एक अन्य स्थान पर लिखा है, कि जब हम पापी ही थे तो मसीह हमारे लिये मर गया। (रोमियों ५ : ८)। मित्रो, मसीह इतना प्रेमी था कि उसने अपने आपको अधर्मियों के लिये दे दिया। वह स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आ गया, उसने क्रूस की भयानक मृत्यु को ग्रहण कर लिया, क्योंकि वह मनुष्य से प्रेम करता है, और नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो। और उसकी इच्छा है, कि हम भी आपस में एक दूसरे के साथ ऐसा ही प्रेम रखें जैसा कि उसने हम सबसे रखा। (१ यूहन्ना ४ : ७-१०)। अपनी मृत्यु से पूर्व एक जगह उसने कहा, कि जब वह जगत का न्याय

करने के लिये आएगा, तो वह उन लोगों से, जिन्होंने मनुष्यों के साथ प्रेम वा दया का व्यवहार न रखा हो, कहेगा, "हे स्त्रापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं पियासा था, और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया। मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया, मैं नंगा था, और तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाए, बीमार और बन्दीग्रह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली।" और, "तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु हमने कब तुझे भूखा, या पियासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीग्रह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की ?" यीशु ने कहा, कि तब मैं उन से कहूंगा, "कि तुमने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।" (मत्ती २५ : ४१-४५)। सो मित्रो, मसीह चाहता है कि हम भी उसके समान प्रेमी तथा दयालू बनें।

फिर हम मसीह के बारे में देखते हैं, कि वह अपने अपराधियों को क्षमा करता था। एक जगह लिखा है कि एक बार जब कुछ लोग एक स्त्री को पकड़कर ले आए और उसे पत्थरवाह करके मार डालना चाहते थे, क्योंकि वे कहते थे कि इसने पाप किया है। तो यीशु ने उनसे कहा, कि तुम में से जिस किसी ने कभी कोई पाप न किया हो वही मनुष्य इस स्त्री को सबसे पहिले पत्थर मारे। और जब वे यीशु की बात सुनकर उस स्त्री को वहीं छोड़कर चले गए, तो यीशु ने उस से कहा, कि मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता, जा अब पाप न करना। (यूहन्ना ८)। और जब उसके शत्रु उसे क्रूस पर चढ़ा रहे थे, तो वह उनके लिये प्रार्थना करके कह रहा था, कि हे पिता इन्हें क्षमा करना क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं। (लूका २४ : ३४)। प्रभु यीशु ने सिखाया, कि जब तुम प्रार्थना करते हो, "तो यदि तुम्हारे मन

में किसी की ओर से कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो : इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे। और यदि तुम क्षमा न करो, तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा।" (मरकुस ११ : २५-२६)। सो यदि हम यीशु के समान बनना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम यीशु की तरह अपने अपराधियों को क्षमा करें।

एक और जगह हम देखते हैं, कि प्रेरित पौलुस लिखकर यों कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २ : ५-८)। सो यहां से हम देखते हैं, कि मसीह ऐसा आज्ञाकारी था कि परमेश्वर की इच्छा वा आज्ञा को पूर्ण करने के लिये उसने अपने आप को बलिदान कर दिया। यह परमेश्वर की इच्छा थी कि उसका पुत्र मसीह जगत के पापों को अपनी देह के ऊपर लेकर प्रत्येक मनुष्य के पाप के प्रायश्चित के लिये क्रूस पर मृत्यु का स्वाद चखे। (इब्रानियों २ : ९)। और मसीह ने परमेश्वर की इस आज्ञा को पूरा किया। परन्तु यदि हम मसीह के समान बनना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम भी उस की तरह परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा को मानें। परमेश्वर हमें बचाना चाहता है, वह हमारा उद्धार करना चाहता है। लेकिन वह हमसे यह नहीं कहता कि हमें अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिये स्वयं कोई दुख उठाना है, या किसी प्रकार का कोई बलिदान करना है। क्योंकि हमारे पापों का प्रायश्चित तो मसीह ने स्वयं अपने बलिदान के द्वारा कर दिया है। परन्तु

वह चाहता है कि हम उसकी उन आज्ञाओं का पालन करें जिन्हें मानना उद्धार पाने के लिये आवश्यक है, अर्थात् यीशु मसीह में विश्वास लाना, कि वह मेरे पापों का प्रायश्चित है, पापों से मन फिराना कि अब मैं पाप का जीवन नहीं बिताऊंगा, और बपतिस्मा लेना, अर्थात जल के भीतर मसीह की मृत्यु के साथ पुरानी ज़िन्दगी को दफ़नाकर उसके जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाना। (प्रेरितों २ : ३८ ; रोमियों ६ : ३, ४)। परमेश्वर की यह आज्ञा प्रत्येक मनुष्य के लिये है, और हर एक इन्सान जो मसीह के समान बनना चाहता है उसे उसी की तरह परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा को मानना चाहिए। क्या आप मसीह के समान होंगे ? क्या आप उसके समान बनने का प्रयत्न कर रहे हैं ? मित्रो, हमारे सामने एक बहुत बड़ी आशीष है, एक बहुत बड़ी आशा है और इब्रानियों की पत्री का लेखक बाइबल में कहता है, कि, "हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चित रहकर क्योंकर बच सकते हैं ?" (इब्रानियों २ : ३)।

सो परमेश्वर अपने वचन को समझने और उस पर चलने के लिये आपकी अगुवाई करे।

—०—

एक विशाल आज्ञा

मित्रो :

प्रभु यीशु का जीवन एक बड़ा ही प्रभावपूर्ण जीवन था। हम देखते हैं, कि उसके जन्म के समय से लेकर उसकी मृत्यु तक, और यहाँ तक, कि उसके स्वर्ग पर वापस उठा लिये जाने के समय तक अनेकों ऐसी सनसनीखेज घटनाएं घटीं, जिनके कारण सारे यरुशलेम और आस-पास के सभी देशों में खलबली मच गई। और विशेषकर पृथ्वी पर यीशु के अंतिम तीन वर्ष आश्चर्य पूर्ण घटनाओं से इस कदर भरपूर थे, कि यूहन्ना, जो उन कामों का स्वयं एक गवाह था, जो यीशु ने लोगों के बीच किए, बाइबल में एक जगह लिखकर यूं कहता है, "और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।" (यूहन्ना २१ : २५)। यीशु ने बड़े-बड़े उपदेश दिए, अच्छी-अच्छी शिक्षाएं दीं, और बहुतेरे भलाई के काम किए। परन्तु आज मैं आपके सामने न तो यीशु के आश्चर्य-पूर्ण कामों की चर्चा करने जा रहा हूं और न ही आज हम उसके उपदेश या विभिन्न शिक्षाओं के विषय में देखने जा रहे हैं, किन्तु आज हम यीशु की उस विशाल आज्ञा के बारे में विचार करने जा रहे हैं जिसे उसने अपने स्वर्गारोहण से कुछ ही क्षण पूर्व दिया। यह आज्ञा केवल इसी दृष्टि-कोण से महत्वपूर्ण नहीं है कि ये शब्द पृथ्वी पर यीशु के अंतिम शब्द थे, परन्तु इस आज्ञा में एक बड़ी ही विशाल बात हम यह देखते हैं कि यह आज्ञा सारे जगत और सारी सृष्टि के सारे लोगों और सब जातियों या संसार के सारे देशों के सारे लोगों के लिये है। और इसी

के समान इस आज्ञा में एक दूसरी विशाल बात हम यह पाते है कि इस आज्ञा का सम्बंध सृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण तथा मूल्यवान वस्तु, अर्थात मनुष्य की आत्मा से है ! सो क्योंकि यह आज्ञा सृष्टि के सारे लोगों के लिये है, और क्योंकि इस आज्ञा का सम्बन्ध सृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु से है, इसलिये यह आज्ञा एक विशाल आज्ञा है।

सो आईए, अब हम इस आज्ञा के संबन्ध में देखें। लेकिन इस से पहले, कि हम बाइबल में से उस जगह से पढ़ें जहां इस विशाल आज्ञा का वर्णन हमें मिलता है, यहां यह कह देना बड़ा ही आवश्यक है, कि यह आज्ञा मसीह यीशु ने अपनी मृत्यु और जी उठने और फिर पृथ्वी पर चालीस दिन तक रहने के बाद उस समय दी जब वह अपने चेलों से एक पहाड़ी पर अन्तिम बार मिला, जहां से वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया। बाइबल के दो लेखकों ने अपनी-अपनी पुस्तकों में इस आज्ञा के सम्बन्ध में विशेष रूप से लिखा है। मत्ती अपनी पुस्तक के अंतिम अध्याय में यूं लिखता है : "और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने बताया था। और उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी किसी को संदेह हुआ। यीशु ने उसके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती २८ : १६-२०)। और फिर दूसरा लेखक, मरकुस, अपनी पुस्तक के अन्तिम अध्याय में इसके सम्बन्ध में यूं कहता है। "पीछे वह उन ग्यारहों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उनकी प्रतीति न की थी। और उसने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के

लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १४-१६)।

अब यहां मसीह की इस विशाल आज्ञा के इन दोनों लेखकों के विवरण से जिन प्रमुख बातों को हम देखते हैं, वे इस प्रकार हैं, कि यीशु ने उन से कहा कि तुम जाकर पृथ्वी पर रहनेवाले सारे लोगों को चेला अर्थात सीखनेवाला बनाओ। एक चेला वह है जो यीशु पर विश्वास लाता है। परन्तु बिना सुने विश्वास कैसे आ सकता है? विश्वास सुनने से होता है। सो हम देखते हैं कि मरकुस इस बात को स्पष्ट करके लिखता है, कि यीशु ने कहा, कि तुम जाकर सारे जगत में सुसमाचार प्रचार करो। क्यों? ताकि लोग विश्वास करें, सीखनेवाले और चेले बनें। परन्तु सुसमाचार क्या है? यह बड़ा ही स्पष्ट है। एक बार इस से पूर्व यीशु ने कहा था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की, अर्थात अपनी आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? (मत्ती १६ : २६)। सो मनुष्य की आत्मा जगत में सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा मूल्यवान वस्तु है। परन्तु पाप के कारण मनुष्य अपनी आत्मा की हानि उठाएगा, क्योंकि मनुष्य पापी है। परन्तु क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने जगत को पाप के दन्ड से बचाने के लिये अपने एकलौते पुत्र यीशु को बलिदान कर दिया, और क्रूस पर उसे चढ़वाकर सारी सृष्टि के लोगों के पापों का प्रायश्चित ठहराया, सो क्रूस के ऊपर यीशु का बलिदान जगत में सारे लोगों के लिये सुसमाचार है, एक खुशी का पैगाम है। और इसी सुसमाचार को प्रचार करने की आज्ञा यीशु ने अपने चेलों को दी। परन्तु उसने आगे कहा, कि जब लोग इस सुसमाचार को सुनकर विश्वास ले आएं, अर्थात यह मान लें कि यीशु हमारे पापों के लिए मारा गया, तो उन्हें बपतिस्मा दो। परन्तु शायद आप पूछें, कि क्या उद्धार पाने के लिये केवल विश्वास लाना ही आवश्यक नहीं है? जी

नहीं। क्योंकि हम देखते हैं कि यीशु ने इस विशाल आज्ञा में कहा है, कि, "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा।" परन्तु बपतिस्मा क्या है ? बपतिस्मे का अर्थ है, जल के भीतर गाड़े जाना, अर्थात यीशु ने आज्ञा देकर कहा कि जो विश्वास करे उस मनुष्य को पिता, पुत्र, और पवित्रात्मा के नाम से जल के भीतर गाड़ो। और जो मनुष्य इस प्रकार मेरी आज्ञा का पालन करेगा, यीशु ने कहा, उसका उद्धार होगा। प्रेरित पौलुस, बाइबल का एक अन्य लेखक, एक जगह कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों ६ : ३, ४)।

यानि इसका अर्थ यह है, कि जब कोई मनुष्य मसीह में विश्वास लाकर बपतिस्मा लेता है, अर्थात जल के भीतर गाड़ा जाता है, तो वह मसीह की उस मृत्यु की समानता में उसके साथ एक हो जाता है जो उसने हमारे पापों के कारण क्रूस पर सही। और इसी प्रकार बपतिस्मे के द्वारा वह मसीह के कब्र में गाड़े जाने की भी समानता में हो जाता है। तथा उस पानी में से बाहर आकर, वह इसी तरह मसीह के जी उठने की समानता को भी धारण कर लेता हैं।

परन्तु चेलों या विश्वासियों को बपतिस्मा देने के बाद, यीशु ने कहा, कि उन्हें वे सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ। अर्थात उन्हें किस प्रकार मसीही जीवन व्यतीत करना चाहिए, और परमेश्वर की भक्ति वा उपासना करनी चाहिए, ताकि वे अंत में अनन्त जीवन पाएं।

मित्रो, क्या आपने यीशु की इस विशाल तथा महत्वपूर्ण आज्ञा का पालन कर लिया है ? या क्या आप यीशु की इस आज्ञा का पालन करना चाहते हैं ? यदि इस सम्बन्ध में हम आपकी किसी प्रकार सहायता कर सकते हैं तो हमें अवश्य सूचित करें। प्रभु आपको आशीष दे।

एक विशाल यादगार

मित्रो :

मनुष्य के जीवन में यादगार का एक बड़ा ही विशेष स्थान है। मनुष्य जिससे प्रेम करता है उसकी कोई निशानी या यादगार अपने पास रखना चाहता है। यदि किसी बालक की मृत्यु हो जाती है तो उसके मां बाप उसकी छोटी-छोटी वस्तुओं को भी बड़ा सम्भाल-सम्भालकर रखते हैं। यदि हमारे पास अपने किसी बिछड़े मित्र या सम्बन्धी की कोई वस्तु या फोटो होती है तो हम उसे बड़े ध्यान से रखते हैं, वह हमारे लिये एक बड़ी ही प्रिय वस्तु बन जाती है, क्योंकि उसे देखकर हम अपने उस अज़ीज़ को याद कर लेते हैं। संसार के सभी देशों में अपने-अपने देश के महान् लोगों की यादगार में स्मारक तथा भवन बनाए जाते हैं। कुछ ही सौ वर्ष पूर्व शाहजहां नाम के एक राजा ने अपनी रानी की यादगार के लिये एक सुन्दर भवन बनवाया, जिसे देखने के लिये संसार भर के लोग भारत आते हैं। ताज-महल को देखकर हम सभी आज याद करते हैं, कि शाहजहां अपनी रानी से कैसा प्रेम करता था, और उसके प्रेम की यादगार में ही आज वह भवन खड़ा हुआ है।

परन्तु मित्रो, अपनों से प्रेम रखना मनुष्य का स्वभाव है। पर एक जगह प्रभु यीशु ने कहा, "क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा ?" (मत्ती ५ : ४६)। वास्तव में, जब हम प्रभु यीशु मसीह के जीवन के सम्बन्ध में पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं, कि संसार के इतिहास में केवल वही एक ऐसा मनुष्य हुआ है जिसने सारी मानवता से ऐसा प्रेम रखा कि जिसकी कहीं और

मिसाल नहीं मिलती। हम ने अनेकों "महापुरुषों" के बारे में सुना है, जिन्होंने अपनी भलाई के लिये किसी को शाप दिया या बुराई के ऊपर बुराई से विजय प्राप्त की। परन्तु प्रभु यीशु ने सिखाया, कि हम बुराई को भलाई से जीतें। (मत्ती ५ : ४४) ; उसने क्रूस पर मरने से पहिले अनेक तरह के क्रूर अत्याचारों का सामना यही प्रार्थना करते हुए किया, कि पिता तू इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं। लूका २३ : ३४)। और क्रूस के ऊपर वह उनके लिये नहीं लटकाया गया जो उस से मित्रता रखते थे या उससे प्रेम रखते थे, परन्तु पवित्र बाइबल का लेखक हमें बताता है, "कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ : ८)।

परन्तु, अपनी मृत्यु से पूर्व प्रभु यीशु ने एक बड़ी ही अद्भुत याद-गार की स्थापना की। पवित्र बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि अभी जबकि उसकी मौत उससे कुछ ही घन्टे दूर थी, और जब वह अपने चेलों के साथ भोजन करने बैठा, तो उसने रोटी ली और आशीष मांगकर तोड़ी। फिर उसने वह रोटी अपने चेलों को देकर कहा कि तुम इसमें से खाओ, यह मेरी देह है। इसी प्रकार उसने दाख रस का कटोरा लिया और धन्यवाद देकर अपने चेलों से कहा, कि तुम इस में से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। और उसने कहा, कि मेरे स्मरण के लिये तुम यही किया करो। (मत्ती २६ : २६-२८ ; मरकुस १४ : २२-२५ ; लूका २२ : १४-२०)।

मसीह की मृत्यु के पश्चात, और उसके मुर्दों में से जी उठने तथा स्वर्ग पर वापस उठा लिये जाने के बाद, जब उसने अपने कथनानुसार प्रेरितों के ऊपर पवित्रात्मा की सामर्थ को भेजकर अपनी कलीसिया की स्थापना की। तो प्रेरित पौलुस ने कलीसिया के नाम अपनी एक पत्री में लिखकर इस सम्बन्ध में इस प्रकार कहा, "क्योंकि यह बात मुझे प्रभु

से पहुंची, और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी, कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली। और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है : मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा, यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है : जब कभी पीओ तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए प्रचार करते हो।" (१ कुरिन्थियों ११ : २३-२६)।

मित्रो, प्रभु ने हम सब से ऐसा प्रेम रखा, कि हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये उसने क्रूस पर अपनी देह को बलिदान कर दिया, और हमारे पापों को धो डालने के लिये उसने अपना लोहू बहा दिया। जैसा कि एक जगह प्रेरित पतरस लिखकर कहता है कि "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं" क्योंकि "उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।" (१ पतरस २ : २४)। और वह चाहता है, कि हम उसके इस अद्भुत प्रेम को सदा स्मरण रखें, और उसकी देह और लोहू को सदा याद रखें। सो उसने प्रभु-भोज की स्थापना की।

यूं तो प्रभु भोज हमें एक बड़ी ही साधारण सी वस्तु प्रतीत होती है, अर्थात रोटी और दाखरस, यानि अंगूर या किशमिश का रस। परन्तु मित्रो, जो लोग प्रभु यीशु के बलिदान के महत्व को समझते हैं, जो उसकी देह तथा उसके लोहू की कीमत को पहिचानते हैं उनके लिये प्रभु-भोज एक बड़ी ही विशेष तथा महत्वपूर्ण वस्तु है। जिस प्रभु ने हमारे लिये अपनी देह को कुर्बान कर दिया, वही कहता है कि इस रोटी को खाकर तुम मेरी देह को याद किया करना। और जिस प्रभु ने हमारे पापों की क्षमा के निमित अपने लोहू को बहा दिया वही

कहता है, कि इस शीरे को पीकर तुम मेरे लोहू को याद किया करना। प्रभु भोज, मसीह के प्रेम की यादगार है, यह उसके बलीदान की यादगार है।

बाइबल में प्रेरितों के काम की पुस्तक के दूसरे अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि जब लोगों ने सबसे पहिली बार मसीह के प्रेम के सुसमाचार को सुना। और जब उन्होंने पिछली बातों से अपना मन फिराकर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लिया, और इस प्रकार वहां से मसीह की कलीसिया का आरम्भ हुआ। तो लिखा है, "वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" (प्रेरितों २ : ४२)। और आज जब कि मसीह की कलीसिया को बने लगभग दो हज़ार वर्ष हो चुके हैं, आज भी संसार में जहां कहीं मसीही लोग और मसीह की कलीसियाएं विद्यमान हैं, वहां प्रभु-भोज का महत्व उतना ही विशाल है जैसा कि पहिली शताब्दी में था। बाइबल हमें बताती है कि आरम्भ में मसीह की कलीसिया सप्ताह के पहिले दिन, अर्थात रविवार के दिन प्रभु-भोज में भाग लेने के लिये एकत्रित होती थी। (प्रेरितों २० : ६)। और आज भी संसार भर में मसीह की कलीसियाएं हरएक सप्ताह के पहिले दिन उसी प्रकार प्रभु-भोज में भाग लेने के लिये इकट्ठा होती हैं।

मित्रो, प्रभु यीशु ने हम सब के लिये एक बहुत बड़ा बलिदान दिया। उसने हमें नरक के दन्ड से बचाने के लिये स्वयं अपने आपको ही दे दिया। उसने परमेश्वर के अनुग्रह से जगत के हर एक इन्सान के लिये मृत्यु का स्वाद चखा। और जो उसने हमारे लिये किया उसके प्रति अपनी कृतज्ञता तथा धन्यवाद को हम उसकी आज्ञाओं को मानकर ही प्रगट कर सकते हैं। वह चाहता है, कि वे सब जो उसमें विश्वास नहीं रखते, उसमें विश्वास लाएं ; और जिन्होंने अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा नहीं लिया है, वे सब अपना-अपना मन फिराकर बप-

तिस्मा लें। जब लोग ऐसा करते हैं, तो उन्हें वह अपनी उस मन्डली में मिला लेता है जो उसकी कलीसिया है; जिसकी स्थापना उसने स्वयं आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व यरुशलेम में की थी। और फिर वह चाहता हैं कि उसकी मन्डली के लोग हर एक हफ़्ते के पहिले रोज़ इकट्ठे होकर उसके ठहराए उस विशाल भोज में शामिल हों, जो उन्हें उसकी देह और उसके लोहू की याद दिलाता है।

मित्रो, ये बातें आप के सामने मैंने इस आशा तथा विश्वास के साथ रखी हैं कि आप पूरी गम्भीरता के साथ इन पर विचार करेंगे। और यदि आपने उसकी आज्ञाओं पर अभी तक अमल नहीं किया है, तो उन्हें मानने का निश्चय करेंगे। जगत में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु आपकी आत्मा है। और हम सबको एक दिन परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़ा होना है। परमेश्वर आपको समझ और आशीष दे।

—०—

एक विशाल दिन

मित्रो :

इस सुन्दर अवसर के लिये और अपने सुननेवाले सभी श्रोताओं के लिये मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं। आज अपने इस अध्ययन में मैं आपको एक बहुत बड़े दिन के विषय में बताने जा रहा हूं। यों तो बाइबल के इतिहास में हमें बहुतेरे महत्वपूर्ण दिनों का वर्णन मिलता है। हम उस दिन के बारे में पढ़ते हैं; जबकि मूसा परमेश्वर के लोगों को मिसर की गुलामी में से छुड़ाकर ले आया। वह एक महत्वपूर्ण दिन था। फिर हम उस दिन के बारे में पढ़ते हैं, जिस दिन यहूदिया के बैतलहम में संसार के उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु ने जन्म लिया था। वह भी एक महत्वपूर्ण दिन था। फिर जिस दिन परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र मसीह को जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस के ऊपर चढ़वाकर बलिदान कर दिया, वह दिन भी बड़ा ही महत्वपूर्ण दिन था। परन्तु आज हम एक ऐसे दिन के बारे में देखने जा रहे हैं जो महत्व तथा महानता के दृष्टिकोण से अन्य सभी दिनों से विशाल है। और यहां तक कि बाइबल में इस दिन को "प्रभु का दिन" कहा गया है (प्रकाशित-वाक्य १ : १०), और यह वह दिन है जिस दिन प्रभु यीशु मसीह अपनी मृत्यु पश्चात मुर्दों में से जी उठा था।

यूं तो यीशु ने पृथ्वी पर अपने छोटे से जीवनकाल में बड़े-बड़े अर्जाब काम किए थे, और अपने बारे में अनेक आश्चर्यपूर्ण दावे किए थे। परन्तु एक बड़ी ही विचित्र घोषणा यीशु ने यह की थी, कि मैं अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन फिर जी उठूंगा ! इसलिये हम पाते हैं, कि बाइबल में लिखा है, कि यीशु के शत्रुओं ने अर्थात यहूदियों और

रोमियों ने, यीशु की इस विचित्र घोषणा को एक बहुत बड़ा षडयन्त्र समझा। उन्होंने सोचा कि यीशु और उसके चेलों ने आपस में यह साजिश की है, कि जब उसकी मौत के बाद उसकी लोथ को कब्र के भीतर दफना दिया जाएगा तो उसके चेले किसी समय चुपके से आकर उसकी लाश को कब्र के भीतर से निकाल ले जाएंगे, और फिर सब जगह यह समाचार सुनाएंगे कि यीशु अपने कहे अनुसार मुर्दों में से तीसरे दिन जी उठा है।

सो इस बड़े षडयन्त्र को असफल बनाने के प्रयास में, हम देखते हैं, कि जब यीशु क्रूस पर मर गया तो उसकी लोथ को चट्टान में खुदी एक कब्र के भीतर रखने के बाद उन्होंने कब्र के मुंह के ऊपर एक भारी पत्थर रखकर उसे बन्द कर दिया। फिर उस पत्थर पर सरकारी मुहर लगा दी, और रोमी सिपाहियों को तीन दिन तक के लिये कब्र पर कड़ा पहरा देने के लिये तैनात कर दिया। परन्तु सब्त के दिन के बाद, जो कि सप्ताह का आखिरी दिन, और यहूदियों का पवित्र दिन था, सप्ताह के पहिले दिन जो कि वास्तव में यीशु की मृत्यु के बाद का तीसरा दिन था, उस स्थान पर जहां यीशु दफन था और जहां उसकी कब्र पर पहरा दिया जा रहा था एक बड़ी ही अजीब और सनसनीखेज घटना घटी। नए नियम में सुसमाचार के चारों लेखक, अर्थात मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना इस अजीब घटना के बारे में लिखकर हमें बताते हैं, कि किस प्रकार सप्ताह के पहिले दिन, अर्थात रवीवार के दिन सुबह होते ही प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और उस स्थान पर जहां सिपाही पहरा दे रहे थे एक बड़ा भूंईडोल हुआ। उस दूत ने कब्र पर धरे पत्थर को लुढ़का दिया। वे पहरेदार यह सब देखकर भय के मारे कांप उठे ओर मृतक समान हो गए। कुछ ही देर बाद जब कुछ स्त्रीयां यहूदियों की रस्म के अनुसार तीसरे दिन कब्र को देखने आईं, तो वे यह देखकर दंग रह गईं कि वह बड़ा पत्थर कब्र के मुंह के ऊपर से हटा हुआ था। और जब

उन्होंने डरते-डरते कब्र के भीतर झांककर देखा तो उनके आश्चर्य की कोई सीमा न रही क्योंकि यीशु की लोथ, जैसा कि होना चाहिये था, उस कब्र के भीतर न थी। और लूका हमें अपनी पुस्तक में बताता है, कि, "जब वे इस बात से भौचक्की हो रही थीं तो देखो, दो पुरुष झलकते वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए। सो जब वे डर गईं और धरती की ओर मुंह झुकाए रहीं; तो उन्होंने उनसे कहा; तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ती हो ? वह यहां नहीं है, परन्तु जी उठा है; स्मरण करो; कि उसने गलील में रहते हुए तुमसे कहा था : कि अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए; और तीसरे दिन जी उठे।" (लूका २४ : ४-७)।

सो क्योंकि सप्ताह के पहिले दिन मसीह मुर्दों में से जी उठा, इस कारण इस दिन को मसीही इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान मिला। हम देखते हैं, कि यीशु के जी उठने और स्वर्ग पर उठा लिये जाने के बाद, पिन्तेकुस्त नाम के यहूदियों के एक पर्ब्ब के दिन यीशु मसीह ने यरुशलेम में अपनी उस कलीसिया अर्थात मन्डली की स्थापना की जिसे बनाने की प्रतिज्ञा उसने की थी। (मत्ती १६ : १८)। परन्तु बाइबल हमें बताती है, कि पिन्तेकुस्त का दिन हमेशा सप्ताह के पहिले दिन ही आता था। (लैव्यव्यवस्था २३ : १५-१६)। इसी प्रकार हम देखते हैं, कि सप्ताह के पहिले दिन ही, अर्थात जिस दिन कलीसिया की स्थापना हुई थी, सबसे पहिली बार मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया गया। और उसी दिन तीन हज़ार लोगों के लगभग अपना-अपना मन फिराकर और मसीह के नाम से अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर कलीसिया में शामिल हुए। (प्रेरितों २)। इसी के साथ हम यह भी देखते हैं, कि पिन्तेकुस्त के दिन, अर्थात सप्ताह के पहिले दिन ही मसीह ने अपनी उस प्रतिज्ञा को भी पूरा किया, जिसके अनुसार उसने अपने चेलों से कहा था, कि तुम पर पवित्रात्मा आएगा और तुम

सामर्थ पाओगे। हम पढ़ते हैं, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ पाकर उन चेलों ने ऐसी भाषाओं में लोगों को सुसमाचार प्रचार किया जिनका ज्ञान उन्हें न था; और उन्होंने अनेकों सामर्थपूर्ण काम किए। (प्रेरितों १ तथा २)।

सो क्योंकि प्रभु ने सप्ताह के पहिले दिन ऐसे बड़े-बड़े विचित्र काम करके इस दिन को एक विशेष दिन ठहराया। इसलिये मसीहीयत के आरम्भ से ही सप्ताह का पहिला दिन मसीही लोगों के लिये एक बड़ा ही महत्वपूर्ण दिन बन गया। प्रेरितों के आदेशानुसार, वे सप्ताह के पहिले दिन प्रभु की आराधना करने के लिये कलीसिया में एकत्रित होने लगे। प्रभु भोज, जिसकी स्थापना प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु से पूर्व की थी, हर एक कलीसिया में प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन लिया जाने लगा। एक जगह बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि पौलुस और उसके साथी जब त्रोआस नामक स्थान पर सोमवार के दिन पहुंचे तो वे वहां सात दिन तक रुके रहे ताकि सप्ताह के पहिल दिन त्रोआस में मसीही भाईयों के साथ प्रभु-भोज में भाग लें। (प्रेरितों २० : ७)। इसी प्रकार, हम देखते हैं, कि प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थुस नामक स्थान पर मसीह की कलीसिया को अपनी पत्री में लिखकर यह आदेश दिया, कि जैसे मैंने अन्य कलीसियाओं से कहा हैं सो तुमसे भी कहता हूं कि सप्ताह के पहिले दिन तुम अपना-अपना चन्दा इक्ट्ठा किया करो। (१ कुरिन्थियों १६ : १-२)।

न केवल पवित्र शास्त्र परन्तु आज संसार का इतिहास भी इस बात की साक्षी देता है, कि सप्ताह का पहिला दिन प्रभु ने विशेष ठहराया है। इसीलिये हम देखते हैं कि संसार के लगभग सभी देशों में सप्ताह का पहिला दिन छुट्टी का दिन माना जाता है। ऐसा मसीहीयत के आरम्भ से होता आया है। क्योंकि आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व प्रभु यीशु मसीह सप्ताह के पहिले दिन मुर्दों में से जी उठे थे। और उसके

अनुयायी उसकी आराधना वा प्रशंसा करने के लिये इस दिन उसकी कलीसिया में एकत्रित होते हैं। यदि संसार में कोई भी बड़ा दिन हैं या एक विशाल दिन है, तो वह प्रभु का दिन है, अर्थात सप्ताह का पहिला दिन, जिस दिन मसीह मुर्दों में से जी उठा। और वास्तव में केवल यही एक दिन है, जिसे मानने का अधिकार हमें प्रभु के वचन से मिलता है।

मेरी आशा है, कि इन बातों से आप प्रभु के दिन के महत्व को समझ सकेंगे, और इस दिन को अपने जीवनों में उतना ही महत्व देंगे जितना कि प्रभु ने दिया है। प्रभु चाहता है कि इस दिन में हम उसकी उपासना तथा सेवा करें। उसने इस दिन को अपने लिये रखा है। यह दिन शिकार खेलने या सिनेमा इत्यादि देखने का दिन नहीं हैं। परन्तु यह प्रभु का दिन है।

—०—

एक विशाल प्रतिज्ञा

मित्रो :

अब हमारे पास यह समय है कि हम अपने ध्यानों को प्रभु के वचन की ओर लगाएं। हमेशा की तरह आज भी हम प्रभु यीशु मसीह के बारे में देखेंगे। पृथ्वी पर प्रभु यीशु के जीवन के अन्तिम तीन वर्ष बड़े ही वयस्त थे। इस अवधि में यीशु ने बड़े-बड़े काम किए, शिक्षा और उपदेश दिए और कुछ बड़ी ही महत्वपूर्ण प्रतिज्ञाएं भी कीं। एक जगह उसने कहा, कि जो मुझ में विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा मैं उसका उद्धार करूंगा। (मरकुस १६ : १६)। एक अन्य स्थान पर उसने कहा कि मैं अपनी कलीसिया अर्थात मंडली बनाऊंगा। परन्तु आज हम प्रभु यीशु मसीह की एक और बड़ी ही महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा के ऊपर विचार करने जा रहे हैं।

जब यीशु ने जान लिया कि अब परमेश्वर की ओर से उसके बलिदान होने का समय आ पहुंचा है। तो उसने अपने चेलों पर यह प्रगट किया कि वह किस प्रकार कुछ ही समय में पकड़वाया जाएगा, और फिर किस प्रकार झूठे आरोपों के आधार पर दोषी ठहराया जाकर वह क्रूस के ऊपर लटकाया जाएगा। उसके चेले ये सब बातें सुनकर बड़े ही परेशान हो उठे, क्योंकि इस प्रकार की बात की वे कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। उन्होंने यीशु को परमेश्वर का पुत्र माना था। (मत्ती १६ : १६)। क्योंकि उन्होंने उसे मुर्दों को जिलाते और अन्धे, लंगड़े और बहिरों और सब प्रकार के अपाहिजों को चंगा करते देखा था। उन्होंने उसके द्वारा किए गए बड़े-बड़े सामर्थ के कामों को देखा था। इसलिये वे ऐसा सोच भी नहीं सकते थे कि वह इस प्रकार पकड़वाया और क्रूस पर चढ़ाकर मारा जाएगा। परन्तु अपने

चेलों को इन बातों के कारण परेशान और बेचैन देखकर यीशु ने उनसे कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।" (यूहन्ना १४ : १-३)।

यहां हम यीशु की दो बड़ी ही मुख्य प्रतिज्ञाओं के बारे में देखते हैं। अर्थात एक तो यह कि उसने कहा कि मैं फिर वापस आऊंगा। और दूसरी यह, कि मैं आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा, ताकि जहाँ मैं रहूं वहीं तुम भी मेरे साथ रहो। मित्रो, यहां यह बात बड़ी ही ध्यान देने योग्य है, कि यहां जिस प्रकार के शब्दों का उपयोग यीशु ने किया स्वयं यही बात हमें दर्शाती है कि यीशु एक मनुष्य मात्र ही न था। परन्तु वह मनुष्य से बढ़कर था। क्योंकि हम जानते हैं कि कोई भी मनुष्य मरने के बाद वापस नहीं आ सकता। फिर हम यह भी देखते हैं, कि यीशु ने स्वर्ग के बारे में बोलते हुए उसे अपने पिता का घर कहकर सम्बोधित किया। और फिर अपने चेलों से कहा, कि मैं आकर तुम्हें भी अपने साथ ले जाऊंगा, ताकि तुम भी हमेशा मेरे साथ मेरे पिता के घर में रहो।

किन्तु आज उन्नीस शताब्दियां बीत चुकी हैं, लेकिन प्रभु यीशु के चेले आज भी अपने प्रभु के वापस आने और उसके साथ पिता के घर में प्रवेश करने की बाट जोह रहे हैं। क्योंकि वे जानते हैं, कि जिसने प्रतिज्ञा की है वह सच्चा है। क्योंकि उसने कहा है कि, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।" (मत्ती २४ : ३४)। वास्तव में मसीही जीवन की यही एक आशा है। यदि मसीही-यत के भीतर या यह आशा का प्रतिज्ञा न हो, तो वह संसार के किसी भी अन्य धर्म से कुछ भी अधिक बढ़कर न ठहरेगी। क्योंकि जबकि कुछ

लोगों का विश्वास है कि वे मृत्यु के बाद फिर से जन्म लेंगे, और अपने पिछले जीवन के व्यवहार के आधार पर फिर से इस नाशमान संसार में किसी न किसी रूप में पैदा होंगे, चाहे मनुष्य के या चाहे पशुओं के रूप में। और जबकि कुछ लोगों का विश्वास है कि वे अपनी मृत्यु के बाद अपने पापों के प्रायश्चित के लिये आग की ज्वाला में डाले जाएंगे। और जबकि कुछ अन्य लोग सोचते हैं कि वे अपनी मृत्यु के बाद नाश हो जाएंगे और उनका अस्तित्व सदा के लिये मिट जाएगा। परन्तु एक मसीही व्यक्ति का यह पक्का विश्वास है कि वे जो मसीह यीशु में हैं वे उसके वापस आने पर उसके साथ उसके पिता के घर में प्रवेश करेंगे। वे जानते हैं, क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के आत्मिक स्वरूप पर बनाया गया है इसलिये वह हमेशा बना रहेगा। और क्योंकि यीशु ने हमारे पापों का प्रायश्चित क्रूस के ऊपर चुका दिया, है इसलिये अब हम अपने पापों के लिये दोषी न ठहरेंगे। पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, कि, "अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं।" और, "तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (रोमियों २ : १ ; गलतियों ३ : २७)।

परन्तु शायद आप जानना चाहें, कि क्या यीशु मसीह के वापस आने से पहिले कुछ विशेष घटनाएं घटेंगी या क्या कुछ आश्चर्यपूर्ण बातें घटेंगी ? मित्रो यद्यपि आज बहुतेरे लोग पवित्र शास्त्र की बातों को तोड़-मरोड़कर इस प्रकार की बातों का प्रचार कर रहे हैं, परन्तु मैं चाहता हूं कि इस विषय में आप स्वयं प्रभु यीशु के इन शब्दों की ओर ध्यान दें : उसने कहा, कि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है वैसे ही मेरा आना भी होगा। (मत्ती २४ : २७)। और फिर उसने कहा, "क्योंकि जैसे जल-प्रलय के पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें ब्याह शादी होती थी और जब तक जल प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी

मालुम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।" मत्ती २४ : ३८, ३९)। इसके अतिरिक्त यीशु ने इस सम्बन्ध में कई एक दृष्टान्त भी दिए। जिनके द्वारा उसने स्पष्टता से यह सिखाया कि जब वह आएगा तो उसका आना एकाएक और अचानक होगा और इस बात का ज्ञान किसी भी मनुष्य को न होगा। (मत्ती २४ : ४२-५१ ; मत्ती २५)। परन्तु फिर एक जगह प्रेरित पौलुस कहता है ; "कि जैसे रात को चोर आता है वैसे ही प्रभु का दिन आनेवाला है।" (१ थिस्सलुनीकियों ५ : २)। और मित्रो, हम सब जानते हैं, कि न तो चोर के आने के समय का ज्ञान किसी को होता है और न कोई बिजली के चमकने के समय का ज्ञान रखता है।

किन्तु फिर शायद आप यह भी जानना चाहें, कि यदि प्रभु आकर अपने चेलों को या अपने अनुयायीयों को अपने साथ ले जाएगा, तो इन सैकड़ों शताब्दियों के भीतर जो उसके अनुयायी अब तक मर चुके हैं और जो उसके आने के समय तक मर जाएंगे, उन सबका क्या होगा ? सो बाइबल का लेखक इस सम्बन्ध में एक जगह उसके अनुयायीयों को लिखकर इस प्रकार कहता है : "हे भाइयो, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, (या अब तक मर गए हैं), अज्ञान रहो ; ऐसा न हो कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिले, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"

(१ थिस्लुनीकियों ४ : १३-१७)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि बाइबल स्पष्टता से हमें बताती है कि प्रभु अपनी प्रतिज्ञा अनुसार एक दिन अवश्य ही वापस आएगा। परन्तु इसी के साथ हम यह भी सफ़ाई से देखते हैं, कि प्रभु अब की बार इस पाप-पूर्ण पृथ्वी के ऊपर वापस नहीं आएगा। लेकिन उसके आने पर उसके सब लोग उसकी सामर्थ से ऊपर उठा लिए जाएंगे ताकि अपने प्रभु के साथ ऊपर मिलें, और उसके साथ स्वर्ग में प्रवेश करें। यद्यपि आज कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि जब प्रभु यीशु वापस आएगा तो वह इस पृथ्वी पर आकर राज्य करेगा। परन्तु वे भूल जाते हैं कि प्रभु ने कहा है, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं है (यूहन्ना १८ : ३६)। वास्तव में, वह उन लोगों के मनों पर आज भी राज्य करता है जो उसमें विश्वास हैं लाते और उसकी मानते हैं। उसका राज्य आत्मिक है। वह लोगों की आत्माओं पर राज्य करता है। और वह आज आपका भी प्रभु बन सकता है, यदि आप उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञाओं पर चलने का निश्चय करेंगे। और इसके बदले में वह कहता है, "और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।"

सो प्रभु अपने वचन के सुननेवालों और उस पर चलनेवालों को आशीष दे।

—०—

एक विशाल आदर्श

मित्रो :

बाइबल अध्ययन के इस समय के लिये मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं। मेरा विश्वास है, कि इस थोड़े से समय में अभी हम जो भी देखने जा रहे हैं, वह सब हमारे लिये बड़े ही आत्मिक लाभ का कारण सिद्ध होगा। बाइबल में एक जगह प्रेरित पतरस लिखकर यों कहता है। "क्योंकि यदि तुमने अपराध करके घूंसे खाए और धीरज धरा, तो इसमें क्या बड़ाई की बात है ? पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।" और "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (१ पतरस २ : २०-२४)। और फिर एक दूसरी जगह, इब्रानियों नाम की पत्री का लेखक इसी सम्बन्ध में यों कहता है ; "इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ

चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा ; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो। तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लोहू बहा हो।" (इब्रानियों १२ : १-४)। फिर प्रेरित पौलुस एक जगह लिखकर कहता है : "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २ : ५-८)।

मित्रो, आज मैं आपको यह बताना चाहता हूं, कि प्रभु यीशु मसीह का जीवन एक आदर्शपूर्ण जीवन था ; और परमेश्वर चाहता है कि हम सब यीशु मसीह के आदर्शों पर चलें। न केवल यीशु ने अच्छे आदर्शों पर चलना ही सिखाया, परन्तु उसने स्वयं एक ऐसा आदर्शपूर्ण जीवन व्यतीत किया जिसका उदाहरण हमें और कहीं नहीं मिलता। जैसा कि अभी हमने पढ़ा, कि वह दुख उठा-उठाकर हमें एक आदर्श दे गया है, कि हम उसके चिन्ह पर चलें। वह भूखा रहा, परन्तु उसने परमेश्वर की परीक्षा न की। उसके पास वस्तुओं का अभाव था, परन्तु उसने कभी भी किसी की वस्तु का लालच न किया। न केवल उसने सिखाया, कि तुम अपने बैरियों से प्रेम रखो, परन्तु उसका मन उस समय उन सबके प्रति प्रेम से उमड़ आया, जो उस पर झूठे दोष लगा रहे थे ; उसे मार और सता रहे थे और क्रूस के ऊपर उसे कीलों से ठोक रहे थे—और उसने परमेश्वर से उन सब के लिये यह कहकर प्रार्थना की, कि हे परमेश्वर इन बातों के लिये तू इन्हें दोषी न ठहराना,

"इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" (लूका परन्तु २३ : ३४) : उसका प्र म स्वार्थ-रहित था। परमेश्वर की मनसा से वह आप ही हम सबके पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, ताकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित ठहरे।

मित्रो, प्रतिदिन किसी न किसी रूप में हमें पाप से लड़ना पड़ता है, और हम में से बहुतेरे अकसर इस लड़ाई में हार जाते हैं। क्योंकि हम अपने ध्यान को उस आदर्श के ऊपर से हटा लेते हैं, जिसने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ की कि उसके सामने झुकने के विपरीत उसने अपना लोहू बहाकर उस पर विजय प्राप्त की।

एक जगह बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि जब प्रभु यीशु मसीह ने बपतिस्मा ले लिया तो इसके तुरन्त बाद शैतान ने उसकी कड़ी परीक्षा ली। सो लिखा है, कि चालीस दिन-रात निराहार रहने के बाद, जब उसे भूख लगी, "तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है। तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। उस ने उत्तर दिया ; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा। तब इबलीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। और उससे कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र हैं, तो अपने आपको नीचे गिरा दे ; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा ; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे ; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पावों में पत्थर की ठेस लगे। यीशु ने उससे कहा ; यह भी लिखा हे, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर। फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर। उस से कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे। तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा। तब यीशु ने उस से कहा ; हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को

प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।" (मत्ती ४: ३-१०)।

फिर हम देखते हैं, कि इसी प्रकार क्रूस पर चढ़ने से पहिले उसके सामने एक बहुत बड़ा इम्तिहान था ; उसके सामने एक बड़ा ही अहम सवाल था, अर्थात् क्या वह परमेश्वर की आज्ञा मानकर अपने प्राण को खो दे, या उसकी आज्ञा को ठुकराकर अपने प्राण को बचा ले ? वह जानता था कि उसके विषय में परमेश्वर की इच्छा यही है, और इसीलिये उसका जन्म भी हुआ था, वि वह सारे जगत के लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मारा जाए। परन्तु उस समय यीशु के सामने प्रश्न यह था, कि क्या वह परमेश्वर की आज्ञा मानकर जगत के पापों के लिये अपने आप को बलिदान कर दे, या उसकी आज्ञा को टालकर अपने आपको बचा ले ? हम देखते हैं, मित्रो, कि यीशु ने उस पहिली बात को मान लिया, अर्थात उसने परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिये अपने आप को दे दिया। और इसीलिये बाइबल का लेखक हम से एक जगह कहता है, कि, "जैसे मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, ओर मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।"

मित्रो, इस प्रकार दुख उठाकर यीशु हमारे लिये एक आदर्श छोड़ गया है, अर्थात हम उस की तरह दुखों और परीक्षाओं का सामना करके परमेश्वर की हर एक आज्ञा का पालन करें। यीशु के बारे में लिखा है, कि उसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, "लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा।" मित्रो, जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलते हैं उनके लिये भविष्य में एक बहुत

बड़ा आनन्द धरा है, अर्थात परमेश्वर के राज्य में अनन्त जीवन। और वह जीवन परमेश्वर हम में से हर एक को देना चाहता है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा है कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस में विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)। और यीशु में विश्वास करने का अर्थ यह है, कि हम उसके आदर्श पर चलें, और उसकी आज्ञाओं को मानें। यीशु अपने पिता, अर्थात परमेश्वर के ऊपर पूरा दृढ़ विश्वास रखता था, और ऐसा ही विश्वास उसमें हमें भी रखना चाहिए। यद्यपि उसमें कोई पाप न था, तौभी उसने यूहन्ना से यह कहकर बपतिस्मा लिया, कि हमें इसी रीति से परमेश्वर की सारी धार्मिकता को पूरा करना उचित है। (मत्ती ३ : १३-१७)। सो जबकि वह हम से कहता है कि जो मुझ में विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, (मरकुस १६ : १६), हमें चाहिए कि हम भी उसकी आज्ञा का पालन करें।

यीशु हमारा आदर्श है, और यदि हम उसका अनुसरण करेंगे तो हम उसी की तरह महिमा भी पाएंगे। (प्रकाशित वाक्य १४ : १३)।

प्रभु अपने कदमों पर चलने के लिये आपको सामर्थ दे।

—o—

एक विशाल विश्वास

मित्रो :

आज अपने बाइबल अध्ययन में हम एक बड़ी ही महत्वपूर्ण वस्तु के ऊपर विचार करने जा रहे हैं। यूं तो संसार में ऐसी अनेकों वस्तुएं हैं जो हमारे लिये आज बड़ी ही महत्वपूर्ण बन चुकी हैं। जैसे कि मान लीजिए, बिजली को ही ले लीजिए। यह एक ऐसी वस्तु है जिसका महत्व हमारे आज के जीवन में बहुत ही बड़ा है। बड़े-बड़े शहरों में यदि कुछ ही मिनट के लिये बिजली फ़ेल हो जाती है तो सारी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। परन्तु यद्यपि इस प्रकार की बहुतेरी अन्य वस्तुएं हमारे लिये आवश्यक हैं और हमारे जीवनों में उनका एक विशेष स्थान है। तौभी आज जिस वस्तु की हमें सबसे अधिक आवश्यकता है, वह एक ऐसा विश्वास है जिसमें निश्चय और भरोसा है; एक दृढ़ और अटल विश्वास ; और एक ऐसा विश्वास जिसके बारे में अभी हम पवित्र बाइबल में से पढ़ने जा रहे हैं।

बाइबल में लूका नाम की पुस्तक के सातवें अध्याय में, हम पढ़ते हैं कि जब प्रभु यीशु एक बार कफरनहूम नाम के एक स्थान पर आया, तो उन्हीं दिनों, "किसी सूबेदार का एक दास था जो उसका प्रिय था, और बीमारी से मरने पर था। उसने यीशु की चर्चा सुनकर यहूदियों के कई पुरनियों को उस से यह बिनती करने को उसके पास भेजा, कि आकर मेरे दास को चंगा कर। वे यीशु के पास आकर उससे बड़ी बिनती करके कहने लगे, कि वह इस योग्य है, कि तू उसके लिये यह करे। क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे आराध-

नालय को बनाया है। यीशु उनके साथ-साथ चला, पर जब वह घर से दूर न था, तो सूबेदार ने उसके पास कई मित्रों के द्वारा कहला भेजा, कि हे प्रभु दुख न उठा, क्योंकि मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए। इसी कारण मैं ने अपने आपको इस योग्य भी न समझा, कि तेरे पास आऊं, पर वचन ही कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। मैं भी पराधीन मनुष्य हूं ; और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक को कहता हूं, जा तो वह जाता है ; और दूसरे से कहता हूं कि आ, तो वह आता है ; और अपने किसी दास को कि यह कर, तो वह उसे करता है। यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और उसने मुंह फेरकर उस भीड़ से जो उसके पीछे आ रही थी कहा, मैं तुमसे कहता हूं, कि मैंने इस्त्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।" और फिर लिखा है, कि, "भेजे हुए लोगों ने घर लौटकर, उस दास को चंगा पाया।" (लूका ७ : १-१०)।

यहां इस वर्णन में, न केवल हम यही देखते हैं कि उस मनुष्य ने, जो कि सांसारिक दृष्टिकोण से इतना बड़ा था, अपने आप को प्रभु के सामने ऐसा नम्र ही किया, परन्तु विशेष बात हम यह देखते हैं कि उसका विश्वास बड़ा ही विशाल था। और यहाँ तक, कि प्रभु ने उसकी बात सुनकर अचम्भा किया और कहा, कि ऐसा बड़ा विश्वास मैं ने इस्त्राएल, अर्थात उस जाति में भी नहीं देखा जिनके बीच उसने बड़े-बड़े आश्चर्य के काम किए थे।

मित्रो, इस प्रकार के विश्वास कि आज संसार में हम में से हर एक मनुष्य को कितनी बड़ी आवश्यकता है ! हमें न केवल एक विश्वास की ही आवश्यकता है, क्योंकि संसार में लगभग सभी लोगों का किसी न किसी वस्तु पर विश्वास है, परन्तु हमें वास्तव में एक ऐसे विश्वास की आवश्यकता है जिसके भीतर निश्चय और भरोसा है। हमें एक दृढ़ और अटल विश्वास की आवश्यकता है। हमें उसी प्रकार के विश्वास की

आवश्यकता है जैसा कि उस सूबेदार का था, जिसने यीशु से कहा, कि प्रभु केवल वचन से ही कह दे तो मैं जानता हूं कि मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। अर्थात, उसे प्रभु के वचन पर भी उतना ही भरोसा था जितना कि स्वयं प्रभु पर था। और आज एक ऐसे ही विश्वास की आवश्यकता हम में से हर एक को है। जिसका भरोसा न केवल प्रभु के व्यक्तित्व पर ही हो परन्तु उतना ही उसके उस वचन पर भी हो जो उसने कहा और जिसे उसके प्रेरितों ने बाइबल के नए नियम में लिखकर हमें दिया है।

परन्तु अफ़सोस की बात यही है कि वास्तव में ऐसा नहीं है। क्योंकि आज अधिकाँश लोग अपना विश्वास और भरोसा प्रभु के वचन से भी अधिक उन तस्वीरों के भीतर रखते हैं जिन्हें वे मसीह की तस्वीर कहते हैं। वे लकड़ी और पत्थर के बने हुए क्रूस तो अपने घर में रखना चाहते हैं, परन्तु प्रभु के वचन का उनके मनों में कोई स्थान नहीं है। परन्तु बाइबल में से अभी जहां से हमने उस सूबेदार के वर्णन को पढ़ा था, उस से कुछ ही पहिले हम पढ़ते हैं कि यीशु ने एक जगह कहा, "जब तुम मेरा कहना ही नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो ?" (लूका ६ : ४६)। और फिर एक अन्य स्थान पर उसने कहा, कि, "यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं" इसलिये, "जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है : अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।" (यूहन्ना १२ : ४७, ४८)। सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि यदि हम प्रभु का कहना नहीं मानते, यदि हम उसके वचन पर नहीं चलते तो हमारा धर्म व्यर्थ है, और इस प्रकार हम प्रभु को तुच्छ जानते हैं। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए, कि न्याय के दिन उसका वचन ही हमें दोषी ठहराएगा, यदि आज हम उसके वचन को नहीं

मानते। हम प्रभु के वचन को तुच्छ जानकर उसके पीछे नहीं चल सकते। परन्तु यदि हम प्रभु के पीछे चलना चाहते हैं, तो उसके पीछे हम उसके वचन को मानकर ही चल सकते हैं। और उसके वचन को हमें वैसे ही मानना है जैसे कि उसने हमें दिया है। हम देखते हैं, कि आज धार्मिक दृष्टिकोण से संसार बहुत अधिक बटा हुआ है। कोई कुछ मानता है और कोई कुछ। और यहां तक कि वे सब लोग भी जो एक ही बाइबल को मानने का दावा करते हैं सैकड़ों अलग- अलग सम्प्रदायों में बटे हुए हैं। परन्तु इसका कारण यह नहीं है कि बाइबल हम सबको अलग-अलग बातें बताती है, पर सच्चाई यह है कि लोग प्रभु के वचन को उसी प्रकार से नहीं मानते जैसे कि उसने दिया है, परन्तु उसे तोड़-मरोड़कर और अपनी इच्छानुसार मानते हैं। सो हम क्या देखते हैं ? हम यह देखते हैं, कि जब कि प्रभु ने कहा, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा (मत्ती १६ : १८), लोगों ने अलग-अलग अपनी-अपनी कलीसियाएं बना लीं। जबकि प्रभु का वचन कहता है, कि जिन लोगों का उद्धार होता है उन्हें प्रभु स्वयं कलीसिया में मिलाता हैं (प्रेरितों २ : ४७) लोग अपनी-अपनी इच्छा से अपनी पसन्द की कलीसियाओं को अपनाने लगे। फिर प्रभु कहता है, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा (मरकुस १६ : १६)। परन्तु लोग कहने लगे कि उद्धार केवल विश्वास से ही होता है और मुक्ति पाने के लिये बपतिस्मा लेना कोई आवश्यक नहीं है, जबकि वचन फिर कहता है, कि तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले ! (प्रेरितों २ : ३८)। और जबकि प्रभु ने आज्ञा दी है कि बपतिस्मा उन को दो जो विश्वास लाते हैं (मत्ती २८ : १८, १९ ; मरकुस १६ : १६), लोग आज छोटे-छोटे बच्चों को बपतिस्मा देते हैं। इसी प्रकार जबकि प्रभु का वचन कहता है, कि बपतिस्मे का अर्थ है जल के भीतर गाड़े जाना (मत्ती ३ : १६ ; रोमियों ६ : ३, ४), लोग बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़े जाने के विपरीत जल का छिड़काव करने

लगे। वास्तव में, मित्रो, यहां मैं इसी तरह की अनेकों अन्य और बातों का भी वर्णन कर सकता हूं जो कि प्रभु के वचन के स्पष्ट विरोध में मानी और सिखाई जा रही हैं।

परन्तु आज हम में से यदि कोई भी प्रभु के वचन को उसकी आज्ञानुसार नहीं मान रहा है। यदि हम उसके वचन को उसकी इच्छा अनुसार मान वा सिखा नहीं रहे हैं, तो यह दर्शाता है, कि हम व्यर्थ में उसे प्रभु-प्रभु कहकर मान रहे हैं और हम उसे तुच्छ समझ रहे हैं। परन्तु प्रभु यीशु ने कहा, कि जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता उसे मेरा वचन ही न्याय के दिन दोषी ठहराएगा। सो यदि आप प्रभु यीशु मसीह में विश्वास रखते हैं, तो मैं आपके सामने यह प्रश्न रखता हूं, कि आप उसमें किस प्रकार का विश्वास रखते हैं ? क्या आपका विश्वास केवल उसके व्यक्तित्व पर ही है या क्या आप उसके वचन पर भी विश्वास रखते हैं ? क्या आपका विश्वास उसके भीतर केवल मानसिक ही है या क्या आप उसके वचन की प्रत्येक आज्ञा का भी, उसकी इच्छानुसार, पालन कर रहे हैं ?

मित्रो, हमें आज एक जीवित विश्वास की आवश्यकता है। आज हमें एक ऐसे विश्वास की आवश्यकता है जिसका भरोसा प्रभु के वचन के ऊपर होता है। आज हमें उस विशाल विश्वास की आवश्यकता है जो यह मान लेता है, कि जो कुछ प्रभु ने अपने वचन में कहा है वह दृढ़ और अटल है।

—०—

एक विशाल बलिदान

मित्रो :

हम में से हर एक मनुष्य किसी बलिदान के किस्से को सुनकर अवश्य ही प्रभावित होता है। एक ऐसी ही बलिदान की कहानी इस समय मुझे याद आ रही है, जो कुछ इस प्रकार थी : कि रेल की पटरी के किनारे बसे एक छोटे से गांव में प्रतिदिन की तरह जब दो छोटे लड़के एक दिन स्कूल से वापस आए, तो वे रेल की पटरी के बीच में जाकर खेलने लगे। कुछ ही समय के बाद वे अपने खेल में इतने अधिक व्यस्त हो गए कि उन्हें दूर से आ रही रेल की सीटी का भी पता न चला। वे दोनों यों ही खेलते रहे, और रेलगाड़ी उनकी ओर बढ़ती रही। शायद उन्होंने सोचा होगा कि गाड़ी दूसरी पटरी पर से होकर निकल जाएगी। परन्तु तभी एकाएक, उन बच्चों की मां की दृष्टि उन पर पड़ी, और जैसे ही उसने देखा कि गाड़ी उन बच्चों के बिल्कुल करीब आ चुकी है, वह चिल्लाकर उन दोनों की ओर लपकी और उन्हें धक्का देकर पटरी के बाहर फेंक दिया। परन्तु वह अपने आप को सम्भाल न पाई और स्वयं पटरी के बीच जा पड़ी। कुछ ही पल में गाड़ी निकल गई। तब वे दोनों लड़के अपने कपड़े झाड़ते हुए भूमि पर से उठे, परन्तु वे यह देखकर कांप उठे कि उनकी मां पटरी के बीचो-बीच कटी पड़ी है ! मित्रो, उस मां ने अपने बच्चों को बचाने के लिये यह एक बहुत बड़ा बलिदान दिया।

पवित्र बाइबल में हम इब्राहीम नाम के एक मनुष्य के बारे में पढ़ते हैं। हम पढ़ते हैं कि एक बार जब परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, कि

तू अपने देश, और अपनी जन्मभूमि और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। तो इब्राहीम तुरन्त चल पड़ा। (उत्पत्ति १२)। इब्राहीम के लिये यह एक बहुत बड़ा बलिदान था। फिर थोड़ा और आगे चलकर हम देखते हैं, कि इब्राहीम के पास केवल एक ही लड़का था जिससे वह बहुत अधिक प्रेम रखता था। परन्तु इब्राहीम की परीक्षा लेने के दृष्टिकोण से एक दिन परमेश्वर ने इब्राहीम पर प्रगट होकर उस से कहा, कि तू अपने एकलौते पुत्र इसहाक को लेकर मोरिय्याह नामक स्थान पर जा और वहां मैं तुझे एक जगह बताऊंगा जहाँ तू अपने पुत्र को मेरे निमित्त बलिदान करना। यह काम इब्राहीम के लिये बड़ा ही कठिन था। परन्तु तौभी हम पढ़ते हैं, कि इब्राहीम परमेश्वर की आज्ञा मानकर अपने पुत्र को साथ लेकर चल पड़ा। किंतु जैसे ही इब्राहीम ने अपने लड़के को बलि करने के लिये छुरा उठाया, परमेश्वर ने उसे यह कहकर रोका, इब्राहीम, "उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उससे कुछ कर क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, बरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा ; इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।" (उत्पत्ति २२ : १२)। मित्रो, परमेश्वर का स्थान इब्राहीम के जीवन में इतना बड़ा था, कि वह उसके लिये बड़े से बड़ा बलिदान करने को भी हमेशा तैयार रहता था।

संयोग की बात है, कि हम एक ऐसे देश में रहते हैं जिसकी रक्षा और स्वतंत्रता के लिये समय-समय पर हमारे देशवासियों ने बड़े-बड़े बलिदान किये हैं। गांधी जी ने हमारे देश की स्वतंत्रता के लिये अपने व्यवसाय और आराम को त्याग दिया। उन्होंने अपने सुख का बलिदान कर दिया। जब भी किसी देश ने हमारे देश पर चढ़ाई की है, तो सीमाओं पर हमारे देश के जवानों ने अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर इस देश की रक्षा की है। पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश ने कुछ बड़ी

ही चुनौती-पूर्ण लड़ाईयां लड़ी हैं। ऐसे समय पर अपने देश की मज़बूती और सुरक्षा के लिये हमारे देशवासियों ने बड़े-बड़े प्रशंसनीय बलिदान दिये हैं।

किन्तु जबकि हम बलिदानों की चर्चा कर ही रहे हैं तो मेरा ध्यान उस कंगाल विधवा की ओर भी जाता है जिसने मन्दिर के भंडार में कुल दो पैसे ही डाले, लेकिन यीशु ने अपने चेलों से कहा कि सबसे अधिक इस विधवा ने डाला है। उसके चेले यह सुन बड़े ही आश्चर्य चकित हुए। क्योंकि वे देख रहे थे, कि बड़े-बड़े धनवानों ने भन्डार में बहुत कुछ डाला था, किन्तु उस विधवा ने दो पैसे ही डाले थे। परन्तु यीशु ने उन से कहा कि जबकि "सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इस ने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात अपनी सारी जीविका डाल दी है।" (मरकुस १२ : ४४)। वास्तव में, यह बहुत बड़ा बलिदान था, क्योंकि जब उसने वे पैसे भन्डार में डाल दिए तो उसके पास अपने लिये कुछ भी न बचा।

परन्तु मित्रो, जबकि ये सभी बलिदान जिनके बारे में अभी हम ने देखा, बहुत ही बड़े-बड़े थे। तौभी आज हम एक ऐसे बलिदान के बारे में देखने जा रहे हैं जो इन सभी बलिदानों से बहुत अधिक बड़ा है। और यदि हम उसे "एक विशाल बलिदान" कहें तो कुछ गलत न होगा! क्योंकि वास्तव में वह एक विशाल बलिदान था। और इस बलिदान के विषय में पवित्र बाइबल हमें यूं बताती है, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" क्योंकि, "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" क्योंकि, "प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया ; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया ; और हमारे पापों के प्राय-

श्चित केलिये अपने पुत्र को भेजा।" (यूहन्ना ३ : १६ ; रोमियों ५ : ८ ; १ यूहन्ना ४ : १०)।

और इस विशाल बलिदान कि यह घटना आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व यरुशलेम में कलवरी नाम के एक स्थान पर घटी। जहां परमेश्वर के होनहार के ज्ञान के अनुसार, उसी की इच्छा से, उसके पुत्र यीशु मसीह को लकड़ी के एक क्रूस के ऊपर लटकाया गया। कलवरी का यह स्थान वह स्थान था जहां रोमी सरकार अपने देश के बड़े-बड़े अपराधियों को क्रूस पर लटकाकर मृत्यु दन्ड देती थी। परन्तु उस रोज़ रोमी सरकार का न्यायी यीशु के भीतर कोई दोष न पा सका, और उस ने उसे छोड़ देना चाहा। किन्तु, ताकि परमेश्वर की इच्छा पूरी हो, उसने उन लोगों के डर के कारण, जो यीशु को उसके पास पकड़कर लाए थे, यीशु को उन्हें सौंप दिया कि वे उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाएं।

कैसा विशाल था यह बलिदान ! क्योंकि परमेश्वर ने सारे जगत के लोगों को पाप से मुक्ति दिलाने के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया ! कैसा विशाल था यह बलिदान ! कि जबकि हम सब पापी थे परमेश्वर ने हमें बचाने के लिये हमारे स्थान पर अपने पुत्र को मृत्यु दन्ड दे दिया। कितना विशाल था यह बलिदान ! कि उसने हमसे ऐसा प्रेम किया कि हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये उसने अपने ही पुत्र को दे दिया। वास्तव में यह बलिदान विशाल था ! क्योंकि यह जगत के सारे लोगों के लिये था, ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। यह बलिदान विशाल था, क्योंकि यह मनुष्य की देह को बचाने के लिये नहीं किया गया था, परन्तु इस बलिदान का उद्देश्य मनुष्य की आत्मा को बचाना था। और यह बलिदान परमेश्वर ने इसलिये दिया क्योंकि वह आप से और मुझसे प्रेम करता है ; क्योंकि वह सारे जगत के लोगों से प्रेम करता है। क्योंकि

वह हम सबको पाप के भयानक दन्ड से बचाना चाहता है। परन्तु वह कहता हैं, कि जो कोई मनुष्य मेरे पुत्र में विश्वास करेगा, अर्थात यह विश्वास करेगा, कि यीशु मसीह मेरे पापों के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया, वह नाश न होगा, परन्तु अनन्त जीवन पाएगा। क्या आप उसमें विश्वास करते हैं ? और यदि आप उसमें वास्तव में विश्वास करते हैं, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि आप उसकी आज्ञा भी अवश्य मानेंगे। क्योंकि केवल विश्वास, आज्ञा माने बिना, अपने स्वभाव में उसी प्रकार मरा हुआ है जिस प्रकार से कि देह आत्मा बिना मर जाती है। (याकूब २ : २६)। यदि आप का विश्वास सचमुच में ज़िन्दा विश्वास है. तो वह आपको प्रभु की आज्ञा मानने से कदापि न रोकेगा। प्रभु यीशु ने आज्ञा दी है, कि जो कोई उसमें विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा (मरकुस १६ : १६), अर्थात, यदि आप उसमें विश्वास लाकर अपनी पुरानी ज़िन्दगी को बपतिस्मे के द्वारा पानी की कब्र के भीतर दफ़ना देंगे और फिर जब आप उसमें से बाहर आएंगे, तो वह आपका उद्धार करेगा। क्या आप उसमें सचमुच में विश्वास करते हैं जिसने आपको बचाने के लिये ऐसा विशाल बलिदान दिया है ?

मित्रो, परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमें बचाने के लिये उसने एक ऐसा विशाल बलिदान दिया, क्योंकि वह हम से प्रेम करता है। उसने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने ही एकलौते पुत्र को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। सचमुच में हमारा परमेश्वर कितना महान् है !

—o—

एक विशाल प्रेम

मित्रो :

जबकि एक बार फिर से यह सुन्दर अवसर हमें मिला है, तो आईए हम सब मिलकर अपने मनों को परमेश्वर के वचन की ओर लगाएं। एक जगह बाइबल में हम यूं पढ़ते हैं : "यदि मैं मनुष्य और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल और झनझनाती हुई झांझ हूं। और यदि मैं भविष्यवाणियां कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है ; प्रेम डाह नहीं करता, प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं, भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी, ज्ञान हो तो मिट जाएगा , पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।" (१ कुरिन्थियों १३ : १-८, १३)।

प्रेम वास्तव में एक बड़ा ही शक्तिशाली सिद्धांत है। प्रेम के बिना परिवार, मुहल्ले, गांव और नगर और देश, और यहां तक, कि सारा

संसार बरबाद हो जाएगा। संसार को बने रहने के लिये प्रेम की आवश्यकता है। आपको याद होगा, कि अपने पिछले पाठ में हमने बड़े-बड़े बलिदानों के बारे में देखा था। परन्तु प्रत्येक बलिदान के होने से पहिले प्रेम की आवश्यकता होती है। वह मां अपने बच्चों को बचाने के लिये अपने प्राणों को बलिदान न कर देती, यदि वह उनसे वास्तव में प्रेम न रखती। इब्राहीम परमेश्वर के केवल कहने भर से अपने देश और अपनी जन्म भूमि और अपने पिता के घर को छोड़कर तत्काल न चल पड़ता यदि वह परमेश्वर से प्रेम न रखता। यदि उसके मन में परमेश्वर के प्रति सचमुच में प्रेम न होता तो वह अपने पुत्र इसहाक को उसके लिये कदापि बलिदान न करता। फिर हमने उन लोगों के बारे में देखा था जिन्होंने अपने देश की स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिये बड़े-बड़े त्याग और बलिदान किए। परन्तु यदि उन लोगों को अपने देश से वास्तव में प्रेम न होता, तो वे ये सब कुछ क्यों करते ? और यदि उस कंगाल विधवा को परमेश्वर से हृदय से प्रेम न होता, तो वह उसके मंडार में अपनी सारी जीविका लाकर क्यों डाल देती ? और यदि परमेश्वर हम में से हर एक से सचमुच में प्रेम न रखता, तो वह क्यों हमारे पापों के लिये अपने पुत्र को दोषी ठहराता और उसें क्रूस का दन्ड दिलवाता ?

सो हम देखते हैं, कि प्रत्येक बलिदान का आधार प्रेम हैं। हर एक बलिदान के पीछे प्रेम है। परन्तु हम उन से प्रेम रखते हैं जो हमसे प्रेम रखते हैं। हम उनके लिये बलिदान करते हैं जो हमारे अपने हैं, जो हम से प्रेम रखते हैं। हम अपने बच्चों को बचाने के लिये अपने प्राण दे सकते हैं। परन्तु औरों को बचाने के लिये हम कदापि अपने प्राणों को जोखिम में डालना न चाहेंगे। हम अपने देश के लिये सब कुछ करने को तैयार हो जाएंगे। परन्तु किसी दूसरे देश के लिये हम ऐसा न करेंगे। क्योंकि हम केवल उन्हीं से प्रेम रखते हैं जो लोग हम से प्रेम रखते हैं।

परन्तु आज हम एक ऐसे प्रेम के बारे में देखने जा रहे हैं जिसे हम एक "विशाल प्रेम" कह के सम्बोधित कर सकते हैं। और इस विशाल प्रेम का उदाहरण हमें केवल परमेश्वर के प्रेम में ही मिलता है। पवित्र बाइबल का लेखक इस प्रेम की ओर हमारा ध्यान दिलाकर कहता है : "जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इसमें नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया, और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४ : ९, १०)। "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ : ६-८)।

यहां मैं चाहता हूं कि आप इस बात के ऊपर ग़ौर करें, कि जबकि हम केवल अपने प्रेम रखनेवालों के साथ ही प्रेम रखते हैं, किन्तु परमेश्वर ने हम से उस समय प्रेम रखा जबकि हम उसके विरोध में जीवन व्यतीत कर रहे थे, अर्थात जब हम पापी ही थे। और यही कारण है कि परमेश्वर का प्रेम एक विशाल प्रेम है। क्योंकि हम में से ऐसा कौन है जो किसी ऐसे मनुष्य के लिये अपने लोहू की एक बूंद भी बहाने को तैयार होगा जो उसका बैरी हो ? परन्तु परमेश्वर ने अपने ही एकलौते पुत्र का सारा लोहू हमारे लिये बहा दिया ताकि हमारे पापों का प्रायश्चित हो ! और यह उसने तब किया जब हम अपने पाप और अधर्म के कामों के कारण उसके बैरी थे। उस ने हम से उस समय प्रेम रखा जब हम उसे छोड़कर जगत में अन्य देवी-देवताओं की पूजा कर रहे थे। उसने हम से उस समय प्रेम रखा जब हम संसार के अंध-

कारपूर्ण काम कर रहे थे। सचमुच में, मित्रो, परमेश्वर का प्रेम विशाल है! और उसके प्रेम की विशालता को न हम केवल इसी बात में देखते हैं कि उसने बैरी होने पर भी हम से प्रेम रखा, परन्तु यह बात भी उस के प्रेम के विशाल होने का प्रमाण है कि उसने किसी एक विशेष जाति या देश से ही प्रेम न रखा परन्तु उसने अपने पुत्र को सारे जगत के लिये दे दिया। स्वयं प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, कि, "जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीती से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १४-१६)। इसी कारण हम देखते हैं, कि जब प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु और जी उठने के सुसमाचार की मनादी करने को अपने चेलों को भेजा, तो उसने उन से कहा, "कि तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" (मरकुस १६ : १५)। और, "सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" (मत्ती २८ : १९)। क्योंकि "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६)।

मित्रो, यह बड़े ही महत्व की बात है कि परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम रखा, कि हमें बचाने के लिये उसने इतनी बड़ी कुर्बानी दी। और यदि हम वास्तव में अपनी आत्मा के महत्व को समझते हैं तो हम इसी समय उसके पुत्र में विश्वास लाकर उसकी आज्ञा पर चलने का निश्चय करेंगे। क्योंकि यदि हम परमेश्वर के बलिदान को तुच्छ मानकर उसके प्रेम को ठुकरा देंगे, तो वह अनन्त जीवन, जिसे वह हमें देना चाहता है, उस से हम सदा के लिये वंचित रह जाएंगे। परन्तु आप चाहे कोई भी क्यों न हों, परमेश्वर चाहता है कि आप जान लें कि वह आप से

वास्तव में प्रेम करता हैं और वह नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य नाश हो ; वह आप को अनन्त जीवन देना चाहता है। उसकी इच्छा है, कि आप अपना मन फिराएं, और उसके पुत्र में विश्वास लाकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। (प्रेरितों २ : ३८)।

वास्तव में मनुष्यों को अधर्म के दन्ड से परमेश्वर के प्रेम के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं बचा सकती। क्योंकि मनुष्य के पास ऐसी कोई पवित्र वस्तु नहीं है जिसे वह अपने पापों के प्रायश्चित के लिये परमेश्वर के सम्मुख बलिदान कर दे। परन्तु परमेश्वर का प्रेम क्रूस के ऊपर इसलिये प्रगट हुआ ताकि हम उद्धार पाएं। सो जबकि परमेश्वर ने हम सब से ऐसा विशाल प्रेम रखा, "तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं ?" (इब्रानियों २ : ३)।

—०—

एक विशाल निमन्त्रण

मित्रो :

एक बार फिर से इस प्रोग्राम को सुननेवाले अपने सभी श्रोताओं का हम स्वागत करते हैं, और उन सब का भी जो आज पहली बार इस कार्यक्रम को सुन रहे हैं। इस कार्यक्रम में हम लोगों का ध्यान उन बातों की ओर दिलाते हैं जिनका सम्बन्ध हमारे आत्मिक जीवन से है। हम लोगों को बताते हैं, कि मनुष्य के लिये परमेश्वर की इच्छा क्या है ; उससे मनुष्य का क्या सम्बन्ध है, और वह मनुष्य से क्या चाहता है। शताब्दियों से परमेश्वर भांति-भांति से मनुष्य से बातें करता रहा है। क्योंकि वह उसे अधंकार में नहीं रखना चाहता। सो हम देखते हैं, कि आरम्भ में वह मनुष्य से बाप-दादों अर्थात बुजुर्गों के द्वारा बातें करता था। फिर उसने अपने वचन को भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा प्रगट किया। परन्तु आज वह हम से अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा बातें करता है। (इब्रानियों १ : १, २) और इस प्रोग्राम में हम आपको केवल वही बातें बताते हैं जो परमेश्वर का वचन है, जिनके बारे में हमें पवित्र बाइबल में मिलता है। इस पुस्तक में हम न केवल उन्हीं बातों को पढ़ते हैं जो परमेश्वर ने आज हम पर अपने पुत्र मसीह के द्वारा प्रगट की हैं, परन्तु बाइबल में हम परमेश्वर के उन वचनों को भी पढ़ते हैं जो उसने मसीह से पहिले लोगों को अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पहुंचाए।

यदि संसार में पाप न होता, अर्थात यदि मनुष्य पाप न करता, तो बाइबल के लिखे जाने की कोई आवश्यकता न होती। क्योंकि सम्पूर्ण

बाइबल का एक मुख्य विषय यही है, कि आरम्भ में मनुष्य किस प्रकार अपने पाप के कारण परमेश्वर से दूर और अलग हो गया, और अब वह किस प्रकार फिर से परमेश्वर के पास वापस आ सकता है। क्या आप जानते हैं कि मनुष्य पाप और अधर्म के कारण परमेश्वर के प्रकाश से दूर होकर अन्धकार में चल रहा है ? बाइबल में लिखा है :

"सुनो यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके ; परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया हैं, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" (यशायाह ५९ : १, २)। "और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया, कि वे अनुचित काम करें। सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता और लोभ, और बैर-भाव से भर गए ; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल और ईर्षा से भरपूर हो गए, और चुगल-खोर, बदनाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनानेवाले, माता-पिता की आज्ञा न माननेवाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दय हो गए।" (रोमियों १ : २८-३१)। "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं, कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं। उनका गला खुली हुई कब्र है : उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है : उनके होठों में सांपों का विष है। और उनका मुंह श्राप और कड़वाहट से भरा है। उनके पांव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं। उनके मार्गों में नाश और क्लेश है। उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना। उनकी आंखों के सामने परमेश्वर का भय नहीं···इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

(रोमियों ३ : १०-१८, २३)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि बाइबल मनुष्य को बताती है कि वह वास्तव में, परमेश्वर के दृष्टिकोण में, कहां है। प्रत्येक मनुष्य अपने पाप वा अधर्म के कारण परमेश्वर से दूर और अलग है, परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है, और वह परमेश्वर की महिमा से रहित है। क्या आपने कभी कोई झूठ नहीं बोला ? क्या आपने कभी किसी से कोई डाह या ईर्ष्या नहीं की ? क्या आप ने कभी किसी की किसी वस्तु का लालच नहीं किया ? क्या आप ने कभी कोई पाप नहीं किया ? बाइबल कहती है, कि सबने पाप किया है ! और हम जानते हैं कि हम सब ने पाप किया है। और परमेश्वर कहता है, कि हम अपने अधर्म के कारण उस से दूर और अलग हैं, उसने हमें छोड़ दिया है, हम उसकी महिमा से रहित हैं। क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धर्मी है।

परन्तु, फिर, बाइबल हमें बताती है, कि मनुष्य किस प्रकार अपने पाप वा अधर्म से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के पास वापस आ सकता है। बाइबल कहती है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उसमें जीवन था ; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। और ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया। एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिसका नाम यूहन्ना था। वह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं। वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था। सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी···और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और

हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १ : १-६, १४)। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)।

सो इस प्रकार, परमेश्वर ने अपने वचन को मनुष्य के समान देह-धारी बनाकर अपने पुत्र की नाईं संसार में भेज दिया। परन्तु क्यों? ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अपने पाप के कारण नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। बाइबल बताती है, कि परमेश्वर ने उस मनुष्य यीशु को जगत के सारे लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस पर मृत्यु दन्ड दिलवाया। ताकि उसके द्वारा पाप से छूटकर हर एक मनुष्य परमेश्वर के पास वापस आ सके। सुनिये, कि बाइबल क्या कहती है, लिखा है : "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया, तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया, हमारी ही शांति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे, हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया, और यहोवा (परमेश्वर) ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह ५३ : ४-६)।

मित्रो, यहां मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं, कि पाप एक बोझ है। मान लीजिए यदि आपके ऊपर लगभग एक किलो का बोझ प्रतिदिन रख दिया जाए? कुछ ही दिनों में आप देखेंगे कि वह एक बहुत बड़ा बोझ बन जाएगा। और यदि वह बोझ हटाया न जाए तो बढ़ते-बढ़ते एक दिन वह इतना बड़ा बोझ बन जाएगा कि वह

आपके नाश का कारण हो जाएगा। परन्तु मान लीजिए, उस बोझ से आपको दबे हुए देखकर किसी मनुष्य को, जो आपसे अधिक शक्तिशाली हो, आप के ऊपर दया आ जाए, और वह आप से कहे कि यह बोझ मुझे दे दो, और वह आप के बोझ को अपने ऊपर लेकर उस से आपको मुक्त करने का वचन दे। क्या आप उस भले मनुष्य के निमन्त्रण को स्वीकार न करेंगे ? क्या आप इस प्रकार के निमन्त्रण को सुनकर प्रसन्न न होंगे ?

पाप एक बोझ है। और मित्रो, यह एक ऐसा बोझ है जो मनुष्य की आत्मा पर दिन-प्रति-दिन भारी होता जा रहा है। परन्तु क्योंकि परमेश्वर ने हम सभों के अधर्म के बोझ को अपने पुत्र यीशु मसीह के ऊपर लादकर, उसे क्रूस के ऊपर हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान कर दिया। इसलिये हम में से हर एक आज यीशु मसीह के द्वारा अपने बोझ से छुटकारा प्राप्त कर सकता है। यीशु, परमेश्वर का पुत्र हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर मर गया ; उसने हम सभों के दन्ड को अपने ऊपर ले लिया। इसलिये वह हम सब को मुक्ति दे सकता है। सो वह कहता है : "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (मत्ती ११ : २८-३०)।

क्या आप इस विशाल निमन्त्रण को स्वीकार करेंगे ? यीशु आपको मुक्ति देना चाहता है, वह आपका उद्धार करना चाहता है। वह आपके पापों का प्रायश्चित कर चुका है। और यदि आप उद्धार पाना चाहते हैं तो आपको केवल उसकी आज्ञा को मानना है। उसकी आज्ञा है, कि उद्धार पाने के लिये हर एक मनुष्य उसमें विश्वास लाए, और पाप से मन फिराकर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा

ले। (मरकुस १६-१६ ; लूका १३ : ३)। क्योंकि यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" सो आप चाहे कोई भी क्यों न हों, और आप का बोझ चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, यदि आप यीशु के पास विश्वास और आज्ञा-पालन के साथ आएंगे तो वह अवश्य ही आपका उद्धार करेगा।

प्रभु आपको अपने पास आने के लिये सामर्थ दे।

अब अन्त में एक बार फिर से मैं आपको याद दिलाना चाहता हू, कि यदि आप इन बातों के सम्बन्ध में और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, या प्रभु की आज्ञा पालन करने में हमारी सहायता लेना चाहते हैं तो आप हमें इस पते पर सूचित कर सकते हैं :

सत्य सुसमाचार
बॉक्स न० ३८१५,
नई-दिल्ली ११००४९

—०—